इकाई 9 प्रयोजनमूलक हिंदी : पारिभाषिक शब्दावली

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य
9.1 प्रस्तावना
9.2 पारिभाषिक शब्दावली से तात्पर्य
9.3 पारिभाषिक शब्द के लक्षण अथवा विशेषताएँ
9.4 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण एवं विकास की आवश्यकता
9.5 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत
9.6 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया
 9.6.1 अंगीकरण
 9.6.2 अनुकूलन
 9.6.3 नवनिर्माण
 9.6.4 अनुवाद
9.7 हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली
9.8 शब्दकोश का उपयोग
 9.8.1 शब्दकोश देखने की आवश्यकता
 9.8.2 हिंदी वर्णमाला की जानकारी
 9.8.3 हिंदी शब्दकोश में शब्दों का क्रम
9.9 शब्द को शब्दकोश में खोजना
 9.9.1 वर्णक्रम
 9.9.2 अनुस्वार और अनुनासिक
 9.9.3 स्वरों की मात्राएं
 9.9.4 संयुक्त व्यंजनों से आरंभ होने वाले शब्द
 9.9.5 दो या दो से अधिक व्यंजनों के मेल से बने संयुक्ताक्षर
9.10 वर्णक्रम अथवा अकारादिक्रम का विश्लेषण
9.11 शब्दों को वर्णानुक्रम में लिखना
9.12 सारांश
9.13 शब्दावली
9.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें
9.15 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- पारिभाषिक शब्दावली के मायने समझा सकेंगे
- पारिभाषिक शब्दों की विशेषताएँ बता सकेंगे
- पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया की और सिद्धांतों की जानकारी दे सकेंगे
- हिंदी शब्दकोश का उपयोग कर सकेंगे

9.1 प्रस्तावना

इस खंड की पिछली इकाइयों में आप पढ़ चुके हैं कि प्रयोजनमूलक हिंदी क्या है तथा सामान्य बोलचाल की भाषा तथा साहित्यिक भाषा से प्रयोजनमूलक भाषा किस प्रकार भिन्न होती है। भाषा प्रयुक्ति की संकल्पना का परिचय तथा हिंदी भाषा की विभिन्न प्रयुक्तियों और उनके व्यवहार क्षेत्र की जानकारी भी आपको मिल चुकी है। आप जानते हैं कि सामाजिक स्तर भेद के कारण भाषा में जो अंतर या विशेषता पैदा होती है वही प्रयुक्ति का स्वरूप निर्धारण करती है। इसी कारण प्रयोगशाला में कार्यरत

भौतिकविज्ञानविद् और शेयर बाजार के दलाल को उसकी भाषा से पहचाना जा सकता है। दोनों की भाषा का मुहावरा और शब्दावली अपने ढंग की और विशिष्ट होती है। इस विशिष्टता के आधार पर ही एक प्रयुक्ति को दूसरी प्रयुक्ति से अलग किया जाता है। यह विशिष्टता दो चीजों से बनती है — शब्दावली और कथन का ढंग जिसे मुहावरा भी कहा जाता है।

ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की अपनी-अपनी शब्दावलो होती है इसी तरह जीवन के विभिन्न कार्य-क्षेत्रों की जरूरतों के अनुरूप उन क्षेत्रों की अपनी शब्दावली विकसित हो जाती है। विभिन्न शब्द किसी क्षेत्र विशेष में किसी कार्य अथवा अभिप्राय विशेष के लिए निश्चित अर्थ में इस्तेमाल किए जाते हैं। उस क्षेत्र विशेष में उनका वही अर्थ हो सकता है अन्य कुछ अर्थ नहीं हो सकता। क्षेत्र विशेष की यह शब्दावली उससे संबंधित प्रयुक्ति की पारिभाषिक शब्दावली होती है।

प्रस्तुत इकाई में आप प्रयोजनमूलक हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। हम आपको बताएँगे कि पारिभाषिक शब्दों से क्या तात्पर्य है उनकी क्या आवश्यकता एवं महत्व है। विभिन्न प्रयुक्तियों के संदर्भ में उनकी क्या प्रासंगिकता है वे कैसे बनते हैं तथा प्रयोजनमूलक भाषा में उनका क्या योगदान होता है?

इसके साथ ही इस इकाई में हम आपको हिंदी शब्दकोश का उपयोग करना भी बताएँगे। विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली का उपयोग करते समय आपको अनेक अवसरों पर कोश देखने की जरूरत पड़ सकती है। इसलिए हिंदी शब्दकोशों के बारे में पता होने पर आपको सुविधा होगी। पाठ के अंत में हमने कुछ शब्दकोशों के नाम भी दिए हैं आवश्यकता पड़ने पर आप उनका इस्तेमाल कर सकते हैं।

9.2 पारिभाषिक शब्दावली से तात्पर्य

आपके मन में सहज ही यह प्रश्न उठता होगा कि पारिभाषिक शब्द किसे कहते हैं उनकी क्या विशेषता होती है तथा वे किस काम आते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर से ही हम इस इकाई की शुरुआत करते हैं। आप जानते हैं कि भाषा की सबसे छोटी सार्थक इकाई को शब्द कहते हैं प्रयोग के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं : 1) सामान्य शब्द, 2) अर्ध-पारिभाषिक शब्द, 3) पारिभाषिक शब्द।

1) **सामान्य शब्द :** सामान्य शब्दों की श्रेणी में उन शब्दों को रखा जा सकता है जिनका इस्तेमाल हम दिन-प्रतिदिन के सामान्य व्यवहार में करते हैं जैसे वस्तुओं, स्थानों, संबंधों आदि के वाचक शब्द। इनका संबंध मूलतया मूर्त वस्तुओं, स्थितियों अथवा अवस्थाओं से होता है। किताब, कलम, घर, विद्यालय, बुढ़ापा, बचपन आदि सामान्य शब्द हैं।

2) **अर्ध-पारिभाषिक शब्द :** अर्ध-पारिभाषिक शब्द उन शब्दों को कहा जा सकता है जो सामान्य और पारिभाषिक, दोनों रूपों में प्रयुक्त होते हैं। सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त होने के अलावा जब किसी क्षेत्र विशेष के संदर्भ में उनका इस्तेमाल पारिभाषिक शब्द के रूप में किया जाता है। उदाहरण के लिए हम "आदेश", "दावा", "रस" आदि शब्दों को ले सकते हैं।

3) **पारिभाषिक शब्द :** पारिभाषिक शब्द वे शब्द होते हैं जिनकी निश्चित परिभाषा की जा सके अर्थात् जिसकी सीमाएँ बाँध दी गई हों। यानी वे शब्द जिनका किसी क्षेत्र विशेष में एक निश्चित अर्थ सीमित कर दिया गया हो और उस क्षेत्र विशेष में उन्हें उसी अर्थ में प्रयोग किया जाता है। किसी अन्य अर्थ में नहीं। उदाहरण के लिए जैसे एक शब्द है "आयकर"। अब इस शब्द का प्रयोग किसी व्यक्ति अथवा संस्था की आय पर सरकार के राजस्व विभाग द्वारा वसूल किए जाने वाले कर के अर्थ में किया जाएगा। सरकार से भिन्न किसी संस्था द्वारा वसूल की जाने वाली राशि आयकर नहीं कहलाएगी।

> इस प्रकार कहा जा सकता है कि **पारिभाषिक शब्द से तात्पर्य उस शब्द से है जो किसी क्षेत्र विशेष में एक निश्चित और परिसीमित अर्थ के द्योतक हो। उसकी परिभाषा या व्याख्या की जा सकती हो। उसमें ज्ञान के क्षेत्र, शास्त्र, विषय और प्रसंगानुसार नियतार्थता हो और भाषा व्यवहार वर्ग में उसकी उसकी अर्थ में स्थिर संप्रेषणीयता हो, यानी उस भाषा के प्रयोक्ताओं को वह उसी अर्थ में स्वीकार्य हो।**

किसी भाषा की पारिभाषिक शब्दावली का सीधा संबंध उस भाषा-भाषी जन-समूह के सांस्कृतिक और वैचारिक विकास से होता है। जैसे-जैसे उस जन-समुदाय का जीवन संश्लिष्ट, जटिल और वैविध्यपूर्ण

होता जाता है, भाषा में भी विविध मूर्त-अमूर्त संकल्पनाओं का विकास होता जाता है। परिणामस्वरूप उन संकल्पनाओं की पारिभाषिक शब्दावली विकसित होती जाती है। इस तरह विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, दर्शन, साहित्यशास्त्र, कला, वाणिज्य, प्रशासन आदि विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों में चिंतन और व्यवहार के माध्यम से विभिन्न संकल्पनाएँ विकसित होती हैं और उनकी अभिव्यक्ति क्षेत्र-विशेष के पारिभाषिक शब्दावली द्वारा होती है। समाज जिन-जिन क्षेत्रों में विकास करेगा उन-उन क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली उस समाज की भाषाओं में विकसित होगी। किसी समाज का सांस्कृतिक-वैज्ञानिक विकास और भाषा-विकास इसी दृष्टि से एक-दूसरे से अभिन्न होते हैं।

9.3 पारिभाषिक शब्द के लक्षण अथवा विशेषताएँ

प्रश्न है कि अपनी किन विशेषताओं के कारण कोई शब्द पारिभाषिक शब्द होता है, दूसरे शब्दों में किस दृष्टि से वह सामान्य शब्दों से विशिष्ट होता है। इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए पारिभाषिक शब्द के लक्षणों पर विचार करना आवश्यक है।

1) **नियतार्थता :** पारिभाषिक शब्द का अर्थ किसी ज्ञान-विशेष के क्षेत्र में नियत और निश्चित होना चाहिए।

2) **परस्पर-अपवर्जिता अथवा अनन्यता (mutual exclusiveness) :** एक प्रमुख अर्थ को व्यक्त करने वाला एक ही शब्द होना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि पारिभाषिक शब्दों के पर्यायवाची नहीं होते। उदाहरण के लिए "पानी", "जल", "नीर" तीन शब्दों का इस्तेमाल एक दूसरे की जगह हो सकता है लेकिन "अधिकारी", "प्राधिकारी", "कर्मचारी" शब्दों का एक-दूसरे के पर्याय के रूप में प्रयोग नहीं कर सकते।

3) **स्पष्टता और असंदिग्धता :** अर्थ की निश्चितता और परस्पर अपवर्जिता के लिए जरूरी है कि पारिभाषिक शब्द अपने आप में स्पष्ट और असंदिग्ध हो।

4) **एक संकल्पना के लिए एक शब्द :** यदि एक संकल्पना के लिए एक से अधिक शब्द होंगे तो उनकी अर्थगत अनन्यता कायम नहीं रहेगी।

5) **भाषा की प्रकृति और उच्चारण पद्धति के अनुकूल हो :** यह बात खासतौर पर उन शब्दों के संदर्भ में ध्यान रखने की है जिन्हें अन्य भाषाओं से लिया गया हो। जो शब्द हिंदी भाषा में चल पड़े हैं, वे तो उसकी प्रकृति के अनुरूप ढल गए हैं लेकिन जो बहुत अधिक प्रयोग में नहीं आए हैं, या जिनकी जरूरत अक्सर नहीं पड़ती है उनका अनुकूलन अपेक्षित होता है। यह अनुकूलन रचना और उच्चारण दोनों ही स्तरों पर किया जाता है।

6) **उर्वरता :** उर्वरता से तात्पर्य है किसी शब्द के विस्तार की संभावना। अर्थात् संबंधित संकल्पना के विभिन्न पक्षों को प्रकट करने के लिए संबद्ध शब्द गढ़े जाने की संभावना। उदाहरण के लिए एक पारिभाषिक शब्द लेते हैं — "विधि"। इसमें उपसर्ग-प्रत्यय आदि जोड़कर अन्य अनेक शब्द बनाए जा सकते हैं — "विधि", "संविधि", "संविधान", "सांविधानिक", "प्रविधि" आदि।

9.4 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण एवं विकास की आवश्यकता

हम चर्चा कर चुके हैं कि जीवन के विविध प्रयोजनों की भाषा का प्रमुख आधार उस क्षेत्र की शब्दावली होती है। चिकित्सा शास्त्र, विधि और वाणिज्य की प्रयुक्तियाँ उन क्षेत्रों की शब्दावली और कथन के ढंग से पहचानी जाती है; समाज के भीतर जिन-जिन कार्यक्षेत्रों का सांस्कृतिक और वैचारिक विकास होता है उन क्षेत्रों की शब्दावली आवश्यकता के अनुसार स्वतः विकसित होती है। उदाहरण के लिए कोई वैज्ञानिक रसायन के क्षेत्र में कोई क्या प्रयोग करके निष्कर्ष निकलता है उन निष्कर्षों को प्रस्तुत करने के लिए उसे समुचित नाम देना पड़ेगा और वह नाम उस क्षेत्र का पारिभाषिक शब्द बन जाएगा। जब उस वैज्ञानिक की खोज की जानकारी दुनिया के विभिन्न देशों में पहुँचेगी तो वहाँ की भाषाओं का इस्तेमाल करने वाले वैज्ञानिकों को उस पारिभाषिक शब्द को अपनी भाषा में लाना होगा ताकि वे अपनी भाषा के लोगों को उन निष्कर्षों की जानकारी का लाभ प्रदान करा सकें। अपनी भाषा में उस शब्द को

लाने के लिए वे उसके समकक्ष पर्याय अपनी भाषा में तलाशेंगें यदि वह नहीं मिलेगा तो कोई शब्द गढ़ेंगे या फिर उस शब्द विशेष को अपना लेंगे।

पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण और विकास इसी प्रक्रिया में होता है। शिक्षा, व्यापार, राजनीति, इतिहास आदि से लेकर खेल-कूद के क्षेत्रों तक शब्दावली विकास और निर्माण की प्रक्रिया चलती रहती है।

हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में बड़ी तादाद में पारिभाषिक शब्दावली अंग्रेजी के माध्यम से आई है। कारण, पश्चिमी विज्ञान तथा सामाजिक विद्वानों से हमारा संपर्क अंग्रेजी के माध्यम से हुआ है।

लेकिन इसका यह अर्थ नहीं समझना चाहिए कि अंग्रेजी से परिचय से पहले भारत पारिभाषिक शब्दों से नितांत अनभिज्ञ था। वास्तव में भारत में पारिभाषिक शब्दावली की परंपरा बहुत प्राचीन है। दर्शन, गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, अर्थशास्त्र, न्याय, मीमांसा, व्याकरण, नाट्यशास्त्र, संगीत, काव्य, शिल्प आदि विषयक चिंतन यहां प्राचीन काल से होता चला आ रहा है। इन क्षेत्रों में ज्ञान के पर्याप्त विकास के कारण इनकी समुचित पारिभाषिक शब्दावली संस्कृत भाषा में विकसित हुई। कालांतर में पालि एवं प्राकृत के प्रसार के साथ इस शब्दावली में पालि, प्राकृत शब्दों का समावेश भी होता गया। मध्यकाल में फारसी राजभाषा बन जाने पर प्रशासन एवं न्याय-व्यवस्था के क्षेत्र में अरबी फारसी की पारिभाषिक शब्दावली का प्रसार हुआ। वाणिज्य, व्यापार, कृषि और शिल्पों के क्षेत्र में पर्याप्त शब्दावली हिंदी के तथा अन्य भाषाओं में मौजूद थी। अंग्रेजी शासन की स्थापना के पश्चात प्रशासन तथा अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग होने लगा। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के आरंभ में अंग्रेजी की स्थिति भारतीय भाषाओं की तुलना में ऊपर रही। इसके दो कारण थे — पहला तो यह कि शिक्षा का ढाँचा अंग्रेजी शासन द्वारा निर्मित था। जिसके अंतर्गत वैज्ञानिक तथा मानविकी विषयों के साथ-साथ वाणिज्य एवं बैंकिंग में भी अंग्रेजी के प्रयोग का बाहुल्य था क्योंकि वहाँ लेखाकरण आदि की पुरानी पद्धति को नहीं अपनाया गया था।
दूसरा, आधुनिक विज्ञान का विकास पश्चिम में हुआ था और उससे हमारा परिचय प्रमुखतया अंग्रेजी के माध्यम से हुआ। दर्शन, राजनीति, अर्थशास्त्र आदि ज्ञान क्षेत्रों से संबंधित पश्चिमी चिंतन का प्रसार भी भारत में अंग्रेजी के माध्यम से ही हुआ। ऐसी स्थिति में ज्ञान-विज्ञान की नई पारिभाषिक शब्दावली अंग्रेजी में ही उपलब्ध थी। लेकिन देश में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की स्थापना काल से ही एक प्रबल माँग भी चली आ रही थी कि भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था हो और इसी के परिणामस्वरूप माध्यमिक स्तर तक मातृभाषा में शिक्षा की व्यवस्था वुडस एजूकेशन डिस्पेच (1856) में की भी गई थी। शिक्षा के माध्यम के प्रश्न के साथ ही पाठ्य पुस्तकें तैयार करके और पारिभाषिक शब्दों के पर्याय स्थिर करके ही मानक भाषा विकसित हो सकती थी। हिंदी में यह कार्य नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ने बड़े ही दायित्व के साथ शुरू किया। बंगाल साहित्य परिषद, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, कुरूकुल काँगड़ी, हरिद्वार आदि संस्थाओं ने भी इस दिशा में काफी योगदान दिया।

कालांतर में आजादी के पश्चात हिंदी को संघ की राजभाषा बनाने और व्यापक सामाजिक व्यवहार की भाषा के रूप में इस्तेमाल का प्रश्न उठा। अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी के प्रयोग की बात आते ही महसूस किया गया कि हिंदी में पर्याप्त और समुचित शब्दावली का विकास हो। इस शब्दावली की आवश्यकता प्रशासनिक एवं प्रयोजनमूलक आधार पर जितनी थी उतनी ही शिक्षा के क्षेत्र में भी थी। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रयास संस्थागत और व्यक्तिगत, दोनों ही स्तरों पर शुरू हुआ। इस दिशा में कई तरह की आवश्यकताएँ थी — अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के लिए हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में से पर्यायों के चयन और जहाँ एक से अधिक पर्याय प्रचलित हों, वहाँ समुचित पर्याय के निर्धारण की आवश्यकता थी। अंग्रेजी के एक शब्द में निहित संकल्पना विशेष के लिए हिंदी में यथा संभव एक ही पर्याय रखना जरूरी था, जिससे शब्दावली में एकरूपता और निश्चितता रहे।

हिंदी में शब्दावली निर्माण का प्रयास स्वाधीनता संग्राम काल में ही आरंभ हो गया। आजादी के बाद प्रशासनिक तथा शैक्षिक जरूरतों की पूर्ति के लिए इसे और अधिक व्यवस्थित योजनाबद्ध तरीके से किया गया। तीन स्तरों पर यह प्रयास हुआ :

1) शैक्षिक तथा साहित्यिक संस्थाएं — नागरी प्रचारिणी सभा, साहित्य सम्मेलन प्रयाग, बंगाल साहित्य परिषद, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हिंदुस्तानी कल्चर सोसाइटी आदि के माध्यम से।
2) व्यक्ति — डॉ. रघुवीर, पं. सुंदर लाल, डॉ. जाफर हसन आदि के प्रयास।
3) भारत सरकार के शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय (अब मानव संस्थान विकास मंत्रालय) द्वारा गठित "वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग" द्वारा।

इनमें डॉ. रघुवीर तथा वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग का कार्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने प्रमुख विषय क्षेत्रों के पारिभाषिक शब्द-संग्रह प्रकाशित किए हैं जिनमें अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्याय दिए गए हैं। प्रशासन-मानविकी, विज्ञान, आयुर्विज्ञान आदि के क्षेत्र के ये शब्द-संग्रह (Glossaries) इन क्षेत्रों में कार्य करने वालों के लिए प्रर्याप्त उपयोगी है।

बोध प्रश्न 1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अधिक से अधिक तीन-चार शब्दों में दीजिए :

1) शब्द कितने प्रकार के होते हैं?

....

....

....

....

2) निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता पारिभाषिक शब्द में नहीं होती?

क) स्पष्टता

ख) उर्वरता

ग) बहुअर्थकता

घ) अनन्यता

3) निम्नलिखित में से कौन किसका पारिभाषिक शब्दावली निर्माण-कार्य में योगदान नहीं है?

क) वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग

ख) डॉ. रघुबीर

ग) डॉ. सुंदर लाल

घ) वित्त मंत्रालय

बोध प्रश्न 2

1) पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की क्या आवश्यकता है? दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

9.5 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

पारिभाषिक शब्दावली तैयार करने के संबंध में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने शब्दावली निर्माण के सिद्धांत तय किए हैं, जो इस प्रकार हैं :

1) अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के अंतर्गत निम्नलिखित उदाहरण दिए जा सकते हैं :

   क) तत्वों और यौगिकों के नाम जैसे हाइड्रोजन, कार्बन, कार्बन डाइआक्साइड आदि;

ख) तौल और माप की इकाइयाँ और भौतिक परिमाण की इकाइयाँ जैसे डाइन, कैलोरी, ऐम्पियर आदि;

ग) ऐसे शब्द जो व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए हैं जैसे फ़ारेनहाइट के नाम पर फ़ारेनहाइट तापक्रम, वोल्टा के नाम पर वोल्टमीटर और ऐम्पियर के नाम पर ऐम्पियर आदि;

घ) वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान, भू-विज्ञान आदि की द्विपदी नामावली;

ङ) स्थिरांक जैसे π, g आदि;

च) ऐसे अन्य शब्द जिनका आमतौर पर सारे संसार में व्यवहार हो रहा है जैसे रेडियो, पेट्रोल, रेडार, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन आदि;

छ) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक, चिन्ह और सूत्र, जैसे साइन, कोसाइन, टेन्जेन्ट, लॉग आदि (गणितीय संक्रियाओं में प्रयुक्त अक्षर रोमन या ग्रीक वर्णमाला के होने चाहिए)।

2) प्रतीक, रोमन लिपि में अन्तर्राष्ट्रीय रूप में ही रखे जाएंगे परन्तु संक्षिप्त रूप नागरी और मानक रूपों में भी, विशेषतः साधारण तोल और माप में लिखे जा सकते हैं, जैसे सेन्टीमीटर का प्रतीक cm हिंदी में भी ऐसे ही प्रयुक्त होगा परन्तु इसका नागरी संक्षिप्त रूप से.मी. हो सकता है। यह सिद्धांत बाल-साहित्य और लोकप्रिय पुस्तकों में अपनाया जाएगा, परन्तु विज्ञान और शिल्पविज्ञान की मानक पुस्तकों में केवल अन्तर्राष्ट्रीय प्रतीक, cm ही प्रयुक्त करना चाहिए।

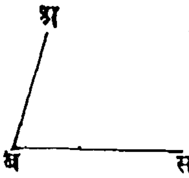

अ

3) ज्यामितीय आकृतियों में भारतीय लिपियों के अक्षर प्रयुक्त किए जा सकते हैं जैसे —

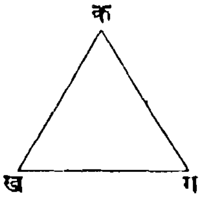

ब

←

परन्तु त्रिकोणमितीय संबंधों में केवल रोमन अथवा ग्रीक अक्षर ही प्रयुक्त करने चाहिए जैसे साइन A, कॉस B आदि।

4) संकल्पनाओं को व्यक्त करने वाले शब्दों का सामान्यतः अनुवाद किया जाना चाहिए।

5) हिंदी पर्यायों का चुनाव करते समय सरलता, अर्थ की परिशुद्धता और सुबोधता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। सुधार विरोधी और विशुद्धिवादी प्रवृत्तियों से बनना चाहिए।

6) सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों में यथासंभव अधिकाधिक एकरूपता लाना ही इसका उद्देश्य होना चाहिए और इसके लिए ऐसे शब्द अपनाने चाहिए जो—

क) अधिक से अधिक प्रादेशिक भाषाओं में प्रयुक्त होते हों, और

ख) संस्कृत धातुओं पर आधारित हों।

7) ऐसे देशी शब्द सामान्य प्रयोग के वैज्ञानिक शब्दों के स्थान पर हमारी भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं जैसे telegraph, telegram के लिए तार, continent के लिए महाद्वीप, atom के लिए परमाणु आदि, ये सब इसी रूप में व्यवहार किए जाने चाहिए।

8) अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के ऐसे विदेशी शब्द जो भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं जैसे इंजन, मशीन, लावा, मीटर, लीटर, प्रिज़्म, टॉर्च आदि इसी रूप में अपनाए जाने चाहिए।

9) **अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण** — अंग्रेजी शब्दों का लिप्यंतरण इतना जटिल नहीं होना चाहिए कि उसके कारण वर्तमान देवनागरी वर्णों के लिए चिन्ह व प्रतीक शामिल करने की आवश्यकता पड़े। अंग्रेज़ी शब्दों का देवनागरीकरण करते समय लक्ष्य यह होना चाहिए कि वह मानक अंग्रेजी उच्चारण के अधिकाधिक अनुरूप हों और उनमें ऐसे परिवर्तन किए जाएं जो भारत के शिक्षित वर्ग में प्रचलित हों।

10) **लिंग** — हिंदी में अपनाए गए अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों को, अन्यथा कारण न होने पर, पुल्लिंग रूप में ही प्रयुक्त करना चाहिए।

11) **संकर शब्द** — वैज्ञानिक शब्दावली में संकर शब्द जैसे ionization के लिए आयनीकरण, voltage के लिए वोल्टता, ringstand के लिए वलय स्टैन्ड, saponifier के लिए साबुनीकारक आदि के रूप सामान्य और प्राकृतिक भाषा शास्त्रीय क्रिया के अनुसार बनाए गए हैं और ऐसे शब्दरूपों को वैज्ञानिक शब्दावली की आवश्यकताओं यथा सुबोधता, उपयोगिता और संक्षिप्तता का ध्यान रखते हुए व्यवहार में लाना चाहिए।

12) **वैज्ञानिक शब्दों में संधि और समास** — कठिन संधियों का यथासंभव कम से कम प्रयोग करना चाहिए और संयुक्त शब्दों के लिए दो शब्दों के बीच हाइफन लगा देना चाहिए। इससे नई शब्द रचनाओं को सरलता और शीघ्रता से समझने में सहायता मिलेगी। जहाँ तक संस्कृत पर आधारित 'आदिवृद्धि' का संबंध है, 'व्यावहारिक', 'लाक्षणिक' आदि प्रचलित संस्कृत तत्सम शब्दों में आदिवृद्धि का प्रयोग ही अपेक्षित है परन्तु नव-निर्मित शब्दों में इससे बचा जा सकता है।

13) **हलंत** — नए अपनाए हुए शब्दों में आवश्यकतानुसार हलंत का प्रयोग करके उन्हें सही रूप में लिखना चाहिए।

14) **पंचम वर्ण का प्रयोग** — पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करना चाहिए, परन्तु lens, patent आदि शब्दों का लिप्यंतरण लेंस, पेटेंट या पेटेण्ट न करके लेन्स, पेटेन्ट ही करना चाहिए।

पारिभाषिक शब्दावली का स्वरूप : आयोग द्वारा शब्दावली निर्माण के लिए निर्धारित सिद्धांत के आधार पर तैयार की गई पारिभाषिक शब्दावली का स्वरूप इस प्रकार है :

क) अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को ज्यो-का-त्यों रखा गया है और उसका केवल देवनागरीकरण किया गया है।

ख) अखिल भारतीय पर्याय संस्कृत धातुओं के आधार पर निर्मित किए गए हैं।

ग) कुछ प्रसंगों में संस्कृत पर्यायों की अपेक्षा स्थानीय हिंदी शब्दों एवं हिंदी में आत्मसात् अन्य भाषा के शब्दों को भी स्वीकृत किया गया है क्योंकि जन-सामान्य में उनका प्रचलन है। ऐसे प्रसंगों में अन्य भाषाओं को भी अपने भिन्न पर्याय रखने की छूट है।

9.6 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धांतों के बारे में जानने के बाद आपके मन में यह जानने की जिज्ञासा होगी कि शब्दावली निर्माण किस प्रक्रिया से किया जाता है। ऊपर आप अंतर्राष्ट्रीय शब्दों के ग्रहण के बारे में पढ़ चुके हैं। लेकिन यहाँ एक बात और समझ लेना जरूरी है कि शब्द ग्रहण की इस पद्धति को किसी बंदिश के तौर पर लागू नहीं किया गया है यानी जिन शब्दों के लिए हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में पर्याय मौजूद हैं और प्रचलित हैं उनके लिए उन पर्यायों का ही इस्तेमाल किया जाएगा। उदाहरण के लिए, "hour" का समकक्ष "घंटा" शब्द मौजूद था तो उसे रखा गया है, जबकि "मिनट" और "सेकिंड" शब्दों को ग्रहण कर लिया गया है। इसी भाँति, जिन ज्ञान शाखाओं की शब्दावली प्राचीन भारतीय विधाओं में मौजूद है — उदाहरण के लिए गणित, दर्शन, अर्थशास्त्र, साहित्यशास्त्र — उनके लिए मौजूद पर्यायों को अपनाया जाता है, "प्रमेय", "स्नातक", "अभिनय" आदि ऐसे ही शब्द हैं। इसी भाँति हिंदीतर भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी शब्दों के लिए प्रचलित पर्यायों को लिया गया है। जैसे 'Bligted area' के लिए मराठी का "झोंपड़पट्टी" शब्द रखा गया है। जो संकल्पनाएँ नई हैं उनके लिए शब्दों के ग्रहण की पद्धति के अलावा नए शब्दों का निर्माण भी किया जाता है। इस प्रक्रिया में अनुवाद का भी सहारा लिया जाता है। इस तरह विभिन्न श्रेणियों के शब्दों को मिलाकर राष्ट्रीय शब्दावली परिवार विकसित किया गया है जिसमें परंपरागत, नवागत और नवनिर्मित तीनों तरह के शब्द हैं। इन शब्दों के निर्माण में निम्नलिखित प्रक्रियाएँ अपनाई गई हैं :

अंगीकरण
अनुकूलन
नवनिर्माण
अनुवाद

9.6.1 अंगीकरण

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण करते समय वैज्ञानिक निर्माण आयोग ने बड़ी मात्रा में अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का चयन किया है। भाग 24.8 के अंतर्गत ऐसे अंतर्राष्ट्रीय शब्दों के उदाहरणों का उल्लेख किया गया है। रासायनिक तत्वों और यौगिक अथवा रेडिकलों के नामों (जैसे कार्बन डाइऑक्साइड, ऑक्सीजन) व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए शब्दों (वोल्ट मीटर, एम्पियर आदि), द्विपद नामावली (जैसे सराका,

इन्डिका, प्यारिन्डस, इन्डिका) आदि को अंगीकृत कर लिया गया है। पेट्रोल, रेडियो, रेडार, डीज़न, इंजन, मोटर, बिस्कुट आदि जैसे भारतीय भाषाओं में रचे-पचे शब्दों को भी स्वीकार किया जाता है। अंगीकृत शब्दों का लिप्यंतरण देवनागरी में करते समय भारतीय भाषाओं की प्रकृति को ध्यान में रखा जाता है।

9.6.2 अनुकूलन

अनुकूलन से अर्थ है शब्द को भाषा के अनुकूल ढालना। जब विदेशी भाषा का कोई शब्द किसी भाषा में ग्रहण कर लिया जाता है तो उसे उस भाषा का (जिसमें उसे ग्रहण किया गया है) शब्द मानकर प्रयोग किया जाता है। उस पर ग्रहीता भाषा के व्याकरण और व्युत्पत्ति नियम लागू होने लगते हैं। भाग 9.5 में आप संकर शब्दों (Hybrid birds) के उदाहरण के रूप मे "आयनीकरण", "वोल्टता", "साबुनीकारक" आदि शब्दों को पढ़ चुके हैं। यहाँ क्रमशः "आयन" के साथ "करण", "वोल्ट" के साथ "ता", "साबुनी" के साथ "कारक" प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है यानी विदेशी शब्द में हिंदी प्रत्यय लगाकर संकर शब्द निर्मित किए गए हैं। अनुकूलन की यह प्रवृत्ति हर भाषा का सहज स्वभाव होती है। उदाहरण के लिए "रेलगाड़ी", "बसअड्डा" जैसे शब्द हिंदी में पहले से मौजूद हैं। इस प्रवृति से भाषा का सहज वाक्य विन्यास कायम रहता है।

9.6.3 नवनिर्माण (Coining of words)

जिन पारिभाषिक शब्दों के समुचित पर्याय भारतीय भाषाओं में उपलब्ध न हों तथा जिन्हें अंगीकृत करना भी उपयोगी न हो, उनके लिए पर्यायों के नवनिर्माण का सिद्धांत अपनाया गया है। इस तरह नए शब्द के निर्माण के लिए संस्कृत की धातु लेकर उनमें उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर शब्द बनाए जाते हैं। "क्रिया" शब्द से "प्रक्रिया", "संक्रिया", "अभिक्रिया", "अनुक्रिया" आदि शब्द बनाए गए हैं। नवनिर्माण की यह पद्धति संकल्पनात्मक शब्दों के लिए तो बहुत ही उपयोगी और व्यावहारिक हैं। इसीलिए राष्ट्रीय शब्दावली के निर्माण में इसे खुलकर अपनाया गया है। बड़ी संख्या में शब्दों का नवनिर्माण किया गया है। इस पद्धति से अर्थ की दृष्टि से नज़दीक अंग्रेज़ी के शब्दों के लिए अलग-अलग हिंदी पर्याय निर्धारित किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए चार अंग्रेज़ी शब्द और उनके हिंदी पर्याय दिए गए हैं :

Maintainance — अनुरक्षण
Preservation — परिरक्षण
Reservation — आरक्षण
Conservation — संरक्षण

यहाँ "रक्षण" में चार उपसर्गों को जोड़कर चार शब्द निर्मित कर लिए गए हैं। उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर बने शब्दों के अन्य उदाहरण देखिए —

प्राधिकार
प्राधिकरण
प्राधिकारी
प्राधिकृत
अधिकृत

इसी प्रकार समास पद्धति द्वारा भी शब्द निर्माण कर लिया जाता है जैसे "अधिकार" से बनाए गए समस्त शब्द हैं :

प्रतिलिप्याधिकार स्वत्वाधिकार	Copyright
विशेषाधिकार	Privilege

इसके अलावा अन्य तरीकों से भी शब्दों का नवनिर्माण किया जाता है जैसे विदेशी शब्दों को ज्यों के त्यों लिप्यंतरित करने की बजाए भारतीय ध्वनियों के अनुसार अनुकूलन जैसे :

Academy — अकादमी
Fantasy — फंतासी
Tragedy — त्रासदी

Comedy — कामदी
Reportage — रिपोर्ताज

एक ही शब्द के अलग-अलग अर्थ संदर्भों को व्यक्त करने के लिए भी पर्यायों में भेद किया जाता है जैसे 'acknowledgement' के लिए "पावती" और "अभिस्वीकृति" रखे गए हैं। कभी-कभी यह अंतर केवल वर्तनी द्वारा व्यक्त किया जाता है जैसे 'Director' के लिए "निदेशक" और "निर्देशक"। "निर्देशक" शब्द किसी नाटक, फिल्म आदि के director के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है, जबकि "निदेशक" प्रशासनिक पद के अर्थ में।

पारिभाषिक शब्दावली से संबंधित कुछ अंग्रेज़ी उपसर्गों और प्रत्ययों के पर्यायों पर भी ध्यान देने की जरूरत है। अंग्रेज़ी के Sub, Joint, Deputy, Vice, Assistant, General आदि उपसर्ग-प्रत्यय के लिए, क्रमशः "उप", "संयुक्त", "उप", "सहायक" और "महा" शब्दों का प्रयोग होता है, जैसे :

Deputy Director — उपनिदेशक
Vice Chairman — उपाध्यक्ष
Sub-Inspector — उप-निरीक्षक
Sub-committee — उप-समिति
Joint Secretary — संयुक्त सचिव
Assistant Secretary — सहायक सचिव

General शब्द अंग्रेज़ी में तो प्रत्यय के रूप में लगता है, लेकिन हिंदी पर्याय में उपसर्ग के रूप में

Director General — महानिदेशक
Solicitor General — महासॉलिसीटर
Attorney General — महान्यायवादी

9.6.4 अनुवाद

शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया में अनुवाद की भूमिका भी बड़ी महत्वपूर्ण है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के विकास के साथ जीवन पद्धतियों में बदलाव के अनुरूप निरंतर अनेक प्रकार की नई-नई संकल्पनाएँ एवं स्थितियाँ विकसित हुई हैं और होती रहती हैं। उनकी अभिव्यक्ति के लिए नई शब्दावली बनती है अथवा पुरानी शब्दावली में अर्थ विस्तार होता है। नई संकल्पनाओं की अभिव्यक्ति सूचक शब्दों के अतिरिक्त संस्थाओं के नामों, पदनामों आदि के संबंध में भी ग्रहीत शब्द-समूहों के अनुवाद की जरूरत पड़ती है। राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली को इस विकास के समकक्ष रखने के लिए ग्रहीत शब्दों के अंग्रेज़ी अनुवाद (Translation of loan words) की पद्धति अपनाई जाती है। इस पद्धति में कभी तो संकल्पना को प्रकट करने वाले पूरे शब्द समूह का अनुवाद कर लिया जाता है। इसकी प्रविधि के उदाहरण के रूप में हम निम्नलिखित शब्दों को ले सकते हैं :

Cold War — शीत युद्ध
Acid Rain — अम्लीय वर्षा
Workshop — कार्यशाला
Managing Director — प्रबंध निदेशक
Development Council — विकास परिषद
Consular Commission — वाणिज्य दूत आयोग
Iron Curtain — लौहपट

दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने पारिभाषिक शब्दों में कभी-कभी कुछ शब्दों का अनुवाद करके कुछ का लिप्यंतरण कर लिया जाता है। उदाहरण के रूप में नीचे दिए गए शब्द देखे जा सकते हैं :

Share Market — शेयर बाज़ार
Canteen Manager — कैंटीन प्रबंधक
Stock Holder — स्टॉक धारक
Censor Officer — सेंसर अधिकारी

9.7 हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया के बारे में आप जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। विभिन्न विषय क्षेत्रों में पारंपरिक शब्दावली को भी ग्रहण किया गया है तथा आवश्यकता के अनुसार नए शब्द गढ़े गए हैं। प्रशासन और विधि के क्षेत्र में फारसी से आए शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग है जबकि विज्ञान के क्षेत्र में शब्दावली के मूल रूप से दो स्तर हैं। संस्कृत धातुओं पर शब्दावली और अंग्रेजी के माध्यम से गृहीत अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली। वाणिज्य क्षेत्र की शब्दावली में पारंपरिक और अंग्रेजी से आए शब्दों का मेल है।

पत्रकारिता और विज्ञापन क्षेत्र की प्रयुक्तियाँ शब्दावली केंद्रित न होकर व्यवहार और विस्तार केंद्रित हैं क्योंकि इनका विस्तार हर क्षेत्र में है। हर क्षेत्र की शब्दावली इनमें आवश्यकतानुसार प्रयुक्त होती है, राजनीति, अर्थव्यवस्था, क्रीड़ा-जगत और वाणिज्य सभी पत्रकारिता के विषय हैं।

नीचे हम हिंदी की प्रमुख प्रयुक्तियों के कुछ शब्द आपकी जानकारी के लिए दे रहे हैं। इनका अर्थ आप शब्दकोश की सहायता से जान सकते हैं। इन विषय क्षेत्रों से संबंधित हिंदी सामग्री में इनका उपयोग भी देख सकते हैं।

प्रशासन : निविदा, संविदा, लेखा, तदर्थ, समायोजन, अभिकरण, प्राधिकरण, प्राधिकारी, प्रभारी, सेवा निवृति, सेवा में व्यवधान, बजट, अंशदान, बेबाकी प्रमाण पत्र, भविष्य निधि,अभिग्रहण, वीज़ा, निरीक्षक नक्शाकार, टेरिफ बोर्ड, तकनीकी लिपिक, राजपत्रित पद, स्थानापन्न अधिकारी, नगर भत्ता, सिविल सेवा, वसीयत, द्विसदनी।

वाणिज्य और बैंकिंग : प्रतिभूति, जमानत, दिवालिया, बीजक, बही खाता, अंत शेष, (रोकड़ बाकी) रोकड़ जमा, रोकड़ बही, रोकड़ शेष, लेखा परीक्षा, ड्राफ्ट, चेक आहरण, देय राशि, लेनदेन, निवेश, शोधन क्षमता, वाउचर, रसीद।

विज्ञान : उत्प्रेरक, अपदलन, कैटा थीसियम, ग्रेफाइट, रासायनिक भार, कीमिया, टर्बरी कॉमन संयुक्त सूक्ष्मदर्शी, अपचय, प्रकीर्णांग, क्वथन, भूस्खलन, एनोमोक्लोन, रेशेदार ऊतक, पूरक धातु, प्रदीप्तिशील पारिस्थितिकी।

विधि : अधिनियम, उपनियम, परिनियम, हस्तांतरण, समनुदेशन, करार, अनुबंध, मुल्तवी करना, अपील, अपीलीय, व्यादेश, दोषसिद्धि, दोषमुक्ति,लिखत, दस्तावेज, दांडिक कार्यवाही, आपराधिक षड्यंत्र।

सामाजिक विज्ञान : आदिम समाजवाद, पूँजीवाद, महानगर, उपनिवेशवाद, उत्पादन प्रणाली, सर्वहारा सार्वजनिक संपत्ति, लोक प्रशासन, सत, वर्ग प्रणाली, कम्यून समष्टि, व्यष्टि, सामासिक संस्कृति, साम्राज्यवाद, बाजार प्रतिस्पर्धा, प्रबंधकीय क्रांति, पैतृकवाद, दबाव समूह।

बोध प्रश्न 3

क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1) अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को हिंदी या भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ………………… किया जाता है।
2) संकल्पनाओं को व्यक्त करने वाले शब्दों का सामान्यतया ………………… किया जाता है।
3) कठिन संधियों का यथा संभव ………………… प्रयोग किया जाता है।
4) भारतीय भाषाओं के शब्दों में एकरूपता लाने की दृष्टि से ………………… पर आधारित शब्द रखे गए हैं।

ख) पारिभाषिक शब्दावली निर्माण में अपनाई गई चार प्रक्रियाएँ कौन सी हैं।

1) …………………………………………………………………………
2) …………………………………………………………………………
3) …………………………………………………………………………
4) …………………………………………………………………………

9.8 शब्दकोश का उपयोग

9.8.1 शब्दकोश देखने की आवश्यकता

प्रयोजनमूलक हिंदी के संदर्भ में पारिभाषिक शब्दावली के महत्व और आवश्यकता के विषय में जानने के पश्चात जिस चीज के विषय में जानना आपके लिए आवश्यक है वह है कोश और उसका उपयोग। आप पढ़ चुके हैं कि विभिन्न विषय क्षेत्रों की अपनी पारिभाषिक शब्दावली होती है। इन पारिभाषिक शब्दों का अर्थ ज्ञान के उस क्षेत्र विशेष में निश्चित और परिसीमित होता है। उस विषय क्षेत्र में उन शब्दों को उसी अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है किसी अन्य अर्थ में नहीं। किसी शब्द का ज्ञान अथवा व्यवहार के किसी क्षेत्र विशेष में क्या अर्थ है, यह पता लगाने के लिए हमें बहुधा शब्दकोश की आवश्यकता होती है। शब्दकोश में यह बताया जाता है कि अमुक शब्द अमुक विषय के संदर्भ में अमुक अर्थ का द्योतक है। शब्दकोश देखकर अपनी आवश्यकता के अनुरूप संदर्भ और प्रसंग में हम सही अर्थ का पता लगा लेते है। उदाहरण के लिए "वर्ण" शब्द भाषा के स्तर पर चिन्ह का द्योतक है हिंदू सामाजिक व्यवस्था में इसका अर्थ पारंपरिक वर्ण व्यवस्था के संदर्भ में प्रयुक्त है अतः सामाजिक विज्ञानों में वर्ण का अर्थ चार वर्णों के संदर्भ में लिया जाता है। "वर्ण" का एक अर्थ रंग भी होता है। इस तरह शब्दकोश में देखकर किसी शब्द के विभिन्न अर्थों का पता लगाया जा सकता है।

इसके साथ ही विभिन्न शब्दों की सही वर्तनी का पता लगाने के लिए भी शब्दकोश देखने की आवश्यकता पड़ती है। कभी-कभी वर्तनी के थोड़े से अंतर के कारण शब्दार्थ बदल जाया करता है। अतः शब्दकोश न केवल सही वर्तनी जानने और उपयोग करने में हमारी सहायता करता है बल्कि मिलती-जुलती वर्तनी वाले शब्दों के अर्थ की भिन्नता का पता लगाने और सही भाषा के इस्तेमाल में भी सहायक होता है। उदाहरण के लिए "ग्रह" और "गृह" शब्द वर्तनी की दृष्टि से एक-दूसरे के काफी करीब हैं लेकिन अर्थ की दृष्टि से बिल्कुल भिन्न हैं।

किसी एक शब्द से बनने वाले विभिन्न शब्दों और उनके अर्थ की जानकारी भी हमें कोश में मिल जाती है।

इस दृष्टि से आपको कोश देखना आना चाहिए। आप सोच सकते हैं भला यह भी कोई कठिन काम है यह तो हम जानते ही हैं। हिंदी नहीं तो अंग्रेजी पढ़ने में हम कोश का इस्तेमाल करते ही रहे हैं। आपके मन में यह विचार आना स्वाभाविक ही है। यह सच है कि अंग्रेजी शब्दों के लिए आपको अक्सर शब्दकोश देखने की आवश्यकता पड़ती ही रहती है। अध्ययन के दौरान तो आपको शब्दकोश देखना ही पड़ता है। इसके अलावा भी कई स्तरों पर इसकी जरूरत पड़ती है। उदाहरण के लिए अखबार में पढ़ते समय कोई नया शब्द सामने आता है और आपको लगता है कि इसका अर्थ जाने बिना आप समाचार समझ ही नहीं सकते। इसी तरह अपने कार्यालय में काम करते समय अक्सर किसी शब्द का अर्थ अथवा सही वर्तनी (spelling) जानने के लिए आपको शब्दकोश देखना पड़ता है।

हिंदी भाषा के मामले में आप कोश का वैसे इस्तेमाल नहीं करते जैसे अंग्रेजी के मामलों में। कारण पहले तो विदेशी भाषा होने के कारण आपको अंग्रेजी में अक्सर नए शब्दों का सामना करना पड़ता है और उनकी सही वर्तनी जाननी पड़ती है। हिंदी का व्यवहार आमतौर पर किसी न किसी रूप में आप करते रहते हैं और ज्यादातर शब्दों के अर्थ या वर्तनी आप अपनी पढ़ाई के दौरान सीख चुके होते हैं। शब्द का अर्थ न भी मालूम हो तो किसी न किसी से पूछ कर पता लगा लेते हैं और काम चल जाता है। हिंदी में उच्चारण और लेखन की समानता के कारण वर्तनी वैसे याद नहीं रखनी पड़ती जैसे अंग्रेजी में रखनी पड़ती है। उदाहरण के लिए हिंदी में 'कबूतर' शब्द के उच्चारण और वर्तनी में कोई भेद नहीं लेकिन अंग्रेजी में 'pigeon' शब्द की वर्तनी याद करनी होगी अन्यथा कोई इसे Pi की जगह Py से भी लिखने की भूल कर सकता है।

लेकिन इसके मायने यह नहीं है कि हिंदी शब्दकोश देखने की आवश्यकता ही नहीं। यदि आप हिंदी भाषा का प्रयोग अपने कामकाज में करते हैं अथवा हिंदी पढ़ते हैं अथवा हिंदी माध्यम से पढ़ते हैं तो बहुधा आपके सामने ऐसी स्थिति आती है जब आपको किसी शब्द का अर्थ नहीं मालूम अथवा किसी शब्द की सही वर्तनी नहीं मालूम। ऐसी स्थिति में उचित होगा कि आप कोश का उपयोग करें। इसके अलावा ऐसी स्थिति भी होती है जब आपको किसी हिंदी शब्द का अंग्रेजी पर्याय पता लगाना पड़ता है। ऐसी स्थिति में आपको हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश देखना ही होता है।

जब आप हिंदी शब्दकोश का उपयोग करना शुरू करते हैं तो कई बार आपको कोश में शब्द ढूँढ़ने में कठिनाई आती है। आप हिंदी वर्णमाला जानते हैं, उसका सही क्रम याद है तब भी कई बार आपको शब्द नहीं मिलता। हिंदी में स्वरों की अभिव्यक्ति मात्राओं के माध्यम से होती है तथा काफी शब्दों में संयुक्त वर्णों का इस्तेमाल होता है। जैसे "प्रकार", "रहस्य", "पृथ्वी"। इसी तरह हिंदी वर्णमाला में "क्ष", "त्र", "ज्ञ" आदि कुछ अक्षर संयुक्ताक्षर हैं। इन संयुक्त अक्षरों से बनने वाले शब्दों को कोश में किसी स्थान पर ढूँढा जाए यह भी प्रश्न कई बार आपके सामने होता है। अनुस्वर और अनुनासिक ध्वनियों वाले शब्दों का सही स्थान भी कई बार कोश में आपको नहीं मिलता

इन सभी कठिनाइओं का समाधान तभी हो सकता है जब आप हिंदी शब्दकोश में वर्णक्रम की पद्धति को समझ लें। यह जानकारी आपको न केवल हिंदी शब्दकोश देखने में उपयोगी होगी वरन हिंदी, हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश अथवा हिंदी तथा किसी भी अन्य भाषा के द्विभाषिक कोश को देखने में सहायक होगी। इसके अतिरिक्त हिंदी मुहावरा कोश, परिभाषा कोश, हिंदी टेलीफोन डाइरेक्ट्री आदि किसी को भी देखने में सहायक होगी। साथ ही यदि कभी आपको कोश निर्माण संबंधी कार्य करना पड़ता है तो भी आप इस पद्धति का लाभ उठा सकेंगे।

9.8.2 हिंदी वर्णमाला की जानकारी

हिंदी शब्दकोश देखने के लिए सबसे पहले आपको हिंदी वर्णमाला की जानकारी होनी चाहिए। वैसे तो वर्णमाला आपको पता है लेकिन उसमें अक्षरों का सही क्रम याद होना चाहिए। इसलिए नीचे हम वर्णमाला दे रहे हैं।

मानक हिंदी वर्णमाला

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

मात्राएं

ा ि ी ु ू े ै ो ौ

अनुस्वार

— (अं)

विसर्ग

(अः)

अनुनासिकता चिह्न

ँ

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ		
च	छ	ज	झ	ञ		
ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़
त	थ	द	ध	न		
प	फ	ब	भ	म		
य	र	ल	व			
श	ष	स	ह			

संयुक्त व्यंजन

क्ष त्र ज्ञ श्र

ऊपर आपने हिंदी वर्णमाला को देखा। इसमें 11 स्वर और 37 व्यंजन हैं। इन व्यंजनों में से "क्ष", "त्र", "ज्ञ" "श्र" चार व्यंजन संयुक्त व्यंजन हैं। "ड" और "ढ" का प्रयोग दो तरह से होता है — सामान्य रूप में तथा नीचे बिंदी लगाकर। अतः ड, ढ और ड़, ढ़ क्रमशः एक ही वर्ण के दो रूप हैं, अलग-अलग वर्ण नहीं। इनसे शुरू होने वाले शब्दों में इनका सामान्य रूप ही प्रयुक्त होता है जैसे डमरू, डकार, ढपली, ढक्कन। इनके नीचे बिंदी अक्सर तब प्रयुक्त होती है जब ये शब्द के बीच में

आते हैं जैसे "सड़क", "लड़ाई", "सड़न", "घड़ी"; "पढ़ना", "बढ़ना", "लुढ़कना" आदि। जब दोनों का संयोग हो तो वर्ण का सामान्य रूप ही होता है जैसे "गड्ढा", "बुड्ढा" आदि।

आपके जानने योग्य महत्वपूर्ण बात यह है कि ये सभी व्यंजन हलंत हैं यानि इनको पूर्णता स्वरों की सहायता से मिलती है। उदाहरण के लिए "क" के अंतर्गत दो ध्वनियाँ शामिल हैं — क् + अ। इसी तरह "ख", "ग़", "च", "ज" आदि सभी व्यंजनों में "अ" स्वर शामिल है:

क् + अ,	ख् + अ,	ग् + अ,	घ् + अ,	ङ् + अ
च् + अ,	छ् + अ,	ज् + अ,	झ् + अ,	ञ् + अ
ट् + अ,	ठ् + अ,	ड् + अ,	ढ् + अ,	ण् + अ
त् + अ,	थ् + अ,	द् + अ,	ध् + अ,	न् + अ
प् + अ,	फ् + अ,	ब् + अ,	भ् + अ,	म् + अ
य् + अ,	र् + अ,	ल् + अ,	व् + अ,	
श् + अ,	ष् + अ,	स् + अ,	ह् + अ	
क्ष् + अ,	त्र् + अ,	ज्ञ् + अ,	श्र् + अ	

संयुक्त व्यंजन जिन वर्णों के मेल से बने हैं, वे क्रमशः इस प्रकार हैं —

क + ष = क्ष, त + र = त्र, ज + त्र = ज्ञ, श + र = श्र

व्यंजनों से बने किसी भी शब्द में स्वर ध्वनियाँ स्वतः निहित होती हैं। उदाहरण के लिए "सफल" शब्द है। इसका वर्ण विश्लेषण करने पर हम पाएँगे कि इसमें निम्नलिखित ध्वनियाँ शामिल हैं:

स् + अ, फ् + अ, ल् + अ

9.8.3 हिंदी शब्दकोश में शब्दों का क्रम

जिस तरह अंग्रेज़ी शब्दकोश में शब्दों की प्रविष्टियाँ वर्णक्रमानुसार (alphabatical order) में होती हैं, उसी तरह हिंदी शब्दकोश में भी प्रविष्टियाँ वर्णक्रमानुसार होती हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए हमने पिछले भाग में हिंदी वर्णमाला दी है। अब आप जानते हैं कि कौन से हिंदी वर्ण स्वर हैं, कौन से व्यंजन तथा कौन से संयुक्त व्यंजन। संयुक्त व्यंजनों को वर्णमाला में तो आखिर में दे दिया जाता है लेकिन शब्दकोश के अंतर्गत उन्हें उसी वर्ण के साथ रखा जाता है जिसके संयोग से वह व्यंजन बना है यानि "क्ष" वर्ण "क" में "ष" के मेल से बना है अतः इसको "क" के क्रम में रखा जाता है।

अंग्रेज़ी कोश में आप देखते हैं कि सबसे पहले 'a' से बनने वाले शब्द शुरू होते हैं, फिर 'b' से बनने वाले, फिर 'c' से बनने वाले। प्रथम अक्षर के क्रम निर्वाह के पश्चात् दूसरे अक्षर का क्रम निर्वाह होता है जैसे 'ab' का फिर 'abac' का। इसी तरह का क्रम अन्य अक्षरों से शुरू होने वाले शब्दों में होता है। जैसे 'g' से बनने वाले शब्द पहले, 'Gab' से बनने वाले शब्द आएँगे, फिर 'Gabble', फिर 'Gaberdine'।

हिंदी में स्वरों की अभिव्यक्ति मात्राओं के द्वारा होती है। अतः कोश में शब्दों को अक्षरों के क्रम के साथ-साथ मात्राओं के क्रम में रखा जाता है। यानी शब्द में प्रयुक्त वर्ण तथा उसमें लगी मात्रा, दोनों का ही क्रम निर्वाह होता है। पहले "क" से बनने वाले शब्द आएँगे, फिर "का" से, फिर "कि", "की" से।

"अ" के अतिरिक्त अन्य सभी स्वर-चिन्ह मात्राओं से व्यक्त किए जाते हैं। जैसे — "शोभा" शब्द में "श" और "भ" व्यंजन तथा "ओ" और "आ" स्वर हैं, जिन्हें क्रमशः " ो" तथा "ा" मात्राओं के व्यक्त किया गया है। अतः "शोभा" शब्द का वर्णक्रम समझना हो तो हमें इस शब्द की मात्राओं के क्रम पर गौर करना होगा। वर्णक्रम निम्नलिखित ढंग से समझा जा सकता है:

श् + ओ + भ् + आ

अगली बात गौर करने की यह है कि अनुस्वार यानी "अं" और अनुनासिक "अँ" ध्वनियों को वर्णमाला में तो स्वरों के बाद रखा जाता है लेकिन शब्दकोश में इन्हें स्वरों के बाद नहीं रखा जाता बल्कि वर्णक्रम में इनको सबसे पहले प्रयुक्त किया जाता है। कहने का मतलब है कि "अं", "अँ" से बनने वाले शब्दों से ही शब्दकोश आरंभ होता है। इतना ही नहीं पूरे कोश में "अं" और "अँ" के स्वरों तथा व्यंजनों के मेल से बनने वाले शब्द पहले आते हैं। इस तरह पूरे कोश में अं, आं, इं, ईं, उं, ऊं, एं,

ऐं, ओं, औं, कं, कां, किं, कीं, कुं, कूं, कें, कैं, कों, कौं, खं, खां, खिं, खीं की तरह क्रम पहले चलता है बाद में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ का क्रम यानी अं से बनने वाले शब्द अ से बनने वाले शब्दों से पहले आते हैं।

कुछ शब्दों में दो या दो से अधिक व्यंजनों का मेल होता है। यह मेल संयुक्त व्यंजनों से इस दृष्टि से भिन्न होता है कि संयुक्त व्यंजन वर्णमाला के अंग हैं जबकि अन्य व्यंजनों को शब्द निर्माण की दृष्टि से मिलाया गया है। उदाहरण के लिए "क्ष" जो क + ष के मेल से बना संयुक्त व्यंजन है, लेकिन "श्लोक" और "आवश्यक" शब्द में श + "ल" या श और य का मेल शब्द की जरूरत के लिए किया गया है। संयुक्त व्यंजनों की स्वतंत्र पहचान होती है जबकि दो व्यंजनों का किसी शब्द विशेष में मेल उनकी अलग अक्षर के रूप में पहचान नहीं बनाता। उपर्युक्त उदाहरण में प्रयुक्त श्ल, श्य अलग अक्षर नहीं हैं, जबकि "क्ष" एक स्वतंत्र अक्षर के रूप में वर्णमाला का अंग है।

एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह है कि स्वतंत्र वर्ण होने के नाते संयुक्त व्यंजन स्वयं किसी अन्य वर्ण के साथ मिलकर भी प्रयुक्त होता है जैसे "लक्ष्य" में। लेकिन दो व्यंजनों का संयोग शब्द विशेष के लिए ही होता है और शब्दकोश में उन्हें रखने का स्थान भी निश्चित होता है। किसी व्यंजन के विभिन्न स्वरों के मेल से बने रूपों के पश्चात् उस व्यंजन का अन्य व्यंजनों के मेल से बना रूप आता है। उदाहरण के लिए पहले "क" के साथ सभी स्वरों की मात्राओं का उपयोग होगा फिर "क" का अन्य व्यंजनों से मेल। यानी "कौ" के बाद "क्या" आएगा। फिर "क" और "य" के इस मेल में भी मात्राओं का क्रम चलेगा जैसे "क्या", "क्यों" आदि। उसके बाद अगले व्यंजन से मेल होगा क + र के मेल से "क्रय", "क्रांत", "क्रिया", "क्रीड़ा", "क्रुद्ध", "क्रेता", "क्रोंच" आदि।

सभी व्यंजनों का एक-दूसरे से मेल जरूरी नहीं होता। कुछेक व्यंजनों के अन्य व्यंजनों से मिलकर बनने वाले शब्दों की तादाद अधिक होती है। जैसे "स" वर्ण का मेल बहुत वर्णों से होता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित शब्दों को देखिए: स्कंद, स्खलन, स्तुति, स्थान, स्नेह, स्पर्श, स्फटिक, स्मरण, स्याह, स्रोत, स्वागत।

उपर्युक्त तथ्यों को दृष्टि में रखते हुए हिंदी कोश में शब्द को ढूँढ़ते समय सबसे पहले जिन चीज़ों पर खास ध्यान देने की जरुरत है, वे हैं:

1) वर्णक्रम
2) अनुस्वार और अनुनासिक
3) स्वरों की मात्राएं
4) संयुक्त व्यंजनों का स्थान
5) दो या दो से अधिक व्यंजनों के मेल से बने शब्दों का स्थान।

यदि आप सही वर्णक्रम समझते हैं और ऊपर बताई गई पाँचों बातों पर ध्यान देते हैं तो आपको शब्दकोश में शब्द खोजने में कोई कठिनाई नहीं होगी। नीचे हम हिंदी शब्दकोश के कुछ अंश उद्धृत कर रहे हैं। इसमें दिए गए शब्दों के क्रम पर गौर कीजिए :

बृहत् हिन्दी कोश

अ

अ—देवनागरी और संस्कृत-कुटुंबकी अन्य वर्णमालाओं का पहला अक्षर और स्वरवर्ण। इसका उच्चारणस्थान कंठ है। व्यंजन-वर्णों का उच्चारण इस अक्षरकी सहायता के बिना नहीं हो सकता, इसलिए क, ख, आदि वर्ण 'अकार' के साथ बोले और लिखे जाते हैं। अन्य० (उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त) रहित, हीन, बुरा, उलटा, भिन्न।

अंक—पुं० (सं०) चिह्न; छाप; संख्या का चिह्न (१, २, ३ आदि); अदद; पत्र-पत्रिकाओं की बँधे हुए समयपर प्रकाशित होनेवाली प्रति, लिखावट, अक्षर 'तुम सन मिटहिं कि विधि के अंका' — रामा, कलंक, दाग, डिठौना, तप्त मुद्रा का सांप्रदायिक चिन्ह; भूषण, नाटक का एक खंड या सर्ग, रूपक का एक प्रकार, हुक जैसा टेढ़ा औज़ार, वक्र रेखा, झुकाव, मोड़, गोद, क्रोड, बगल, नकली लड़ाई, चित्रयुद्ध, स्थान, देह, *दफा, वार, पाप, अपराध, पर्वत, एक की संख्या। **करण**—पु० चिन्ह लगाने की क्रिया। **कार**—पु० बाजी आदि का निर्णायक, वह योद्धा जिसके हारने या जीतने से हार या जीत मान ली जाती थी। **गणित**—पु० संख्याओं का हिसाब, संख्याओं को जोड़ने-घटाने, गुणा-भाग आदि करने की विद्या। **गत**—वि० पकड़ में आया हुआ। **तंत्र**—पु० अंकशास्त्र, पाटीगणित या बीजगणित। **धारण**—पु० देह पर सांप्रदायिक चिन्ह (शंख, चक्र, त्रिशूल आदि) छपवाना, छाप लगवाना। **धारी**—(रिन्) -वि० शंख, चक्र आदि के चिन्ह धारण करनेवाला। **पत्र**—पु० **पत्रित**—वि०दे० क्रम में **परिवर्तन**—पु० करवट बदलना; बच्चे का गोद

में इधर से उधर होना; नाटक में अंक का बदलना। **पलई**—स्त्री० (हि०) दे० 'अँक पलई'। **पादव्रत**—पु० एक व्रत। **पालि, पालिका**—स्त्री० गोद, दाई; आलिंगन। **पाली**—स्त्री० परिचारिका; वेदिकानामक गंधद्रव्य; आलिंगन। **पाश**—पु० गणित की एक क्रिया; आलिंगन की मुद्रा। **पूरण**—पु० गुणन। **बंध**—पु० झुककर गोद का आकार बनाना; मस्तकहीन मनुष्य का चित्र अंकित करना। **भाक् (ज्)** —वि० गोद में बैठा हुआ; बहुत निकट। **माल**—पु० आलिंगन, अँकवार। **मालिका**—स्त्री० अंकमाल; छोटी माला। **मुख**—पु० नाटक का आरंभिक भाग जिसमें बीज-रूप में कथानक दिया रहता है। **लोडय**—पु० वृक्षविशेष। **लोप**—पु० अंकों को घटाना। **विद्या**—स्त्री० अंकगणित। **शायिनी**—वि० स्त्री० बगल में सोने वाली। स्त्री० पत्नी **शायी (यिन्)** —वि० बगल में सोने वाला। **शास्त्र**—पु० दे० सांख्यिकी। **मु० देना**—गले लगाना। **भरना, लगाना**—गले लगाना, लिपटाना।

अंकक—पु० (सं०) हिसाब लिखनेवाला; चिह्न करनेवाला। (स्त्री० 'अंकिका'।)

अँकटा—पु० छोटा कंकड़; कंकड़का छोटा टुकड़ा।

अँकटी—स्त्री० कंकड़ का छोटा टुकड़ा, कंकड़ी।

अँकड़ी—स्त्री० टेढ़ी कँटिया; लग्गी; टेढ़ी गाँसी; लता।

अंकति—पु० (सं०) हवा; अग्नि; ब्रह्मा; अग्निहोत्री।

अंकन—पु० (सं०) चिन्ह करना; लेखन; चित्रण; शरीर पर शंख, चक्र आदि छपवाना; गिनती करना; चिन्ह बनाने का साधन।

अँकना—अ०क्रि० आँका जाना; लिखा जाना; अंकित होना।

अंकनी—स्त्री० (पेंसिल) एक प्रकार की लेखनी जो लकड़ी या धातु के पीले लंबे से टुकड़े में सीसे या विशेष प्रकार के मसाले की सलाई बैठाकर तैयार की जाती है, पेंसिल।

अंकनीय—वि० (सं०) अंकन के योग्य; मुद्रित करने योग्य।

अंकपत्र—पु० (स्टांप) निर्धारित मूल्य पर मिलनेवाला कागज का टुकड़ा जो लिफाफे, अर्जी आदि पर लगाया जाता है, स्टांप टिकट।

अनकपत्रित—वि० (स्टांप्ड) (वह लिफाफा, पत्र या न्यायिक आवेदन-पत्र) जिसपर अंकपत्र (स्टांप) लगा हो।

अंकपलई—स्त्री अंकों को अक्षरों के रूप में काम में लाने की एक विद्या।

अंकम—पु० अंक, गोद।

अँकरा—पु० एक घास; अंकुर; कंकड़का टुकड़ा।

अँकरास—पु० देह टूटना; आलस्य; शैथिल्य।

अँकरी—स्त्री० छोटा अँकरा (अँकरा का अल्प०)।

अँकरोरी, अँकरौरी—स्त्री० कंकड़ी; कंकड़ आदि का बहुत छोटा टुकड़ा।

अँकवाई—स्त्री० अंकवाने की क्रिया या मजदूरी।

...ाना—स० क्रि० अंकित कराना; जँचवाना, मूल्य निर्धारित कराना। आँकने के लिए प्रेरित करना, अँकाना।

अँकवार—स्त्री० गोद, अंक; आलिंगन। मु० **देना**—गले लगाना। **भरना**—गोद में भरना, गोद में बच्चे का रहना।

अँकवारना*—स० क्रि० आलिंगन करना, भेंटना।

अँकवारी*—स्त्री० गोद।

अंकस—पु० (सं०) चिन्ह; शरीर। वि० चिन्हयुक्त।

अंकांक—पु० (सं०) जल।

अंकाई—स्त्री० आँकने की क्रिया, कूत, अंदाजा; आँकनेकी उजरत।

अँकाना—स० क्रि० अंदाजा लगवाना; जँचवाना; चिन्ह कराना; मूल्य ठहरवाना।

अँकाव—पु० आँकने का काम; अंदाजा लगाने का काम।

अंकावतार—पु० (सं०) नाटक में अंक के अंतका वह भाग जिसमें अगले अंक के अभिनेय विषय की सूचना रहती है।

अंकित—वि० (सं०) चिह्नित; लिखित; चित्रित; गिना हुआ — **मूल्य**—पु० वह मूल्य जो किसी मुद्रा; ऋणपत्र आदि पर अंकित हो पर जो विशेष स्थितियों या विशेष कारणों से घटता-बढ़ता रहे।

मूल्य—पु० (फेस वैल्यू) वह मूल्य जो किसी मुद्रा, ऋणपत्र आदि पर अंकित हो पर जो विशेष स्थितियों में या विशेष कारणों से घटता-बढ़ता रहे; प्रत्यक्ष मूल्य।

अंकिनी—स्त्री० (सं०) चिन्हों का समूह; चिन्हों वाली स्त्री।

अंकिलां—वि० अंकित, दागवाला। पु०-दागा हुआ सांड़।

अंकी (किन्)—पु॰ (सं॰) छोटा नगाड़ा; मृदंग (जो अंक में लेकर बजाया जा सके)।
अंकुट, अंकुड़क—पु॰ (सं॰) ताली, कुंजी।
अँकुड़ा—पु॰ लोहे का टेढ़ा काँटा; लोहे की छड़ या कँटियाके बने कुछ औजार; कुलावा; किवाड़ की चूल में ठोकने का लोहे का पच्चड़; बुनकरों का एक औजार; गाय-बैल का एक रोग जिसमें पेट में ऐंठन होती है।
अँकुड़ी—स्त्री॰ (अँकुड़ा का अल्प॰) हुक; लोहारोंका एक औजार; हलका वह भाग जिसमें फाल लगता है; एक्के के पहिये के जोड़ों पर लगायी जाने वाली कील। **दार**—वि॰ जिसमें अँफुड़ी लगी हो;
*स॰ क्रि॰ आँकना।

हिंदी शब्दकोश को खोलने पर आप पाएंगे कि सबसे पहले "अ" वर्ण से बनने वाले अनुस्वार और अनुनासिकयुक्त शब्द रखे गए हैं — "अ" से पहले "अं" आया है अर्थात् "अंगूर", "अनार" से पहले आएगा। इन शब्दों के क्रम पर गौर कीजिए। सबसे पहले आए "अंक" शब्द में पहला स्वर और पहला व्यंजन है। पहला स्वर "अ" है, अतः अनुस्वार के साथ पहला स्वर "अं" हुआ। इसी तरह पहला व्यंजन "क" है। उसके पश्चात् "अंकक", "अंकटा" आदि शब्दों पर गौर कीजिए। वर्णमाला के क्रम में "क" के पश्चात् "ट" व्यंजन और 'आ" स्वर से मिलकर बना शब्द "अंकटा", फिर "ट" और "ई" से मिलकर बना शब्द "अंकटी"। "ट" व्यंजन के बाद "ड़ी", फिर "ति" आदि आए हैं।

इनमें क्रम निर्वाह की पद्धति पहले वर्ण के पश्चात् दूसरे और फिर तीसरे वर्ण की है। "अ" के बाद आने वाले वर्णों का क्रम निर्वाह अंकटा तक होता रहा है। यानी "अंक" के बाद "अंकक" में तीसरे वर्ण का क्रम निर्वाह है, जो अंकनी तक चला है। गौर करें कि "अंक" से लेकर "अंकनीय" तक क्रमशः टा, टी, ड़ी, ति, न, ना, नी में वर्णक्रमानुसार व्यंजनों और उन पर लगने वाली मात्राओं का निर्वाह है।

अक्षरों से मिलकर बनने वाले शब्द पूरे हो जाने के बाद "अंकनीय" शब्द चार अक्षरों का है। उसके बाद "अंकपत्र" है। क्रमशः "अ" "क" "न" के क्रम निर्वाह के बाद चौथे अक्षर की बारी आई। "अंकनीय" और "अंकपत्र" शब्दों पर गौर कीजिए। अंक का क्रम लगातार चल रहा है, परिवर्तन तीसरे अक्षर में हुआ है। वर्णमाला में "प" वर्ण, "न" वर्ण के बाद आता है, अतः अंकनीय के बाद अंकपत्र को रखा गया है। ध्यान देने की बात है कि शब्द में सर्वप्रथम दूसरे, फिर तीसरे अक्षर का क्रम देखा गया है, फिर चौथे का। इसी दृष्टि से अंकनीय शब्द, अंकपत्र से पहले आया है। "य" वर्ण, "प" वर्ण के बाद का वर्ण है लेकिन वह "प" से पहले इसलिए आया है कि "अंकनीय" शब्द में "य" चौथा और "अंकपत्र" में "प" तीसरा वर्ण है। कोश क्रम में पहले तीसरे वर्ण का पूरा क्रम निर्वाह कर लिया जाएगा फिर चौथे का, फिर पाँचवें और छठे को किया जाएगा।

अब अगले शब्दों पर ध्यान दीजिए। अंकपत्र और अंकपत्रित में "त्र" और "त्रि" का क्रम रखा गया है। इसी प्रकार अंकरा, अंकरास, अंकरी, अँकरोरी में क्रमशः "रा", "रास", "री", "रोरी" का क्रम रखा गया है। अगले शब्द भी इसी क्रम में रखे गए हैं। इस तरह आप देखेंगे कि शब्दकोश में "अं" से आरंभ होने वाले शब्दों के पश्चात् "अ" से आरंभ होने वाले शब्द आएंगे, फिर "आं" से आरंभ होने वाले और फिर "आ" से आरंभ होने वाले, फिर "इं" से आरंभ होने वाले, उसके बाद "इ" से, फिर "उं" से, फिर "उ" से आरंभ होने वाले शब्द। इसी तरह पूरा क्रम चलेगा। उदाहरण के लिए पहले अंचल, अमल, आँगन, आम, इत्र, ईंट, उमा, ऊसर आदि का क्रम पूर्ण वर्णमाला का चलेगा।

9.9 .शब्द को शब्दकोश में खोजना

9.9.1 वर्णक्रम

जैसा कि ऊपर भाग 9.8 में समझाया गया है, कोश देखते समय सबसे पहले आपको चाहिए कि उसे वर्णक्रम के अनुसार शब्दों को शब्दकोश में खोजें। मान लीजिए आपको "आवरण" शब्द खोजना है तो सबसे पहले "आ" से बनने वाले शब्दों को खोजना शुरू करें। फिर "आ" और "व" से बनने वाले शब्दों को, फिर "आ", "व" और "र" से मिलकर बनने वाले शब्दों तक पहुँचें। उनके बाद "आ", "व", "र" और "ण" में खोजने पर आपको "आवरण" शब्द मिल जाएगा। मात्राओं को स्वरों के क्रमानुसार खोजा जाना चाहिए यानी अ, आ, इ, ई, उ, ऊ आदि के क्रम में देखना चाहिए। उदाहरण के लिए नीचे उद्धृत अंश देखिए :

काछा—पु० कुछ ऊपर चढ़ाकर और कसकर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लांगें पीछे खोंसी जाती हैं।

काछी—पु० एक हिंदू जाति जो तरकारियाँ बोने-बेचने का काम करती है, कोयरी, मरार (छत्तीस०)।

काछू—पु० कछुआ।

काछे—अ० पास, निकट।

काछै—अ० दे० 'काछे'।

काज—पु० काम, कार्य, धंधा; अर्थ, प्रयोजन; विवाहादि कृत्य; *ब्याह; बटनका छेद। (**के काज**—के लिए, के वास्ते)

काजर—पु० दे० 'काजल'।

काजरी—स्त्री० वह गाय जिसकी आँख के चारों ओर का हिस्सा काला हो।

काजल—पु० दिये के छुएँ की कालिख जो सुरमे की तरह आँख में लगायी जाती है। **मु० की कोठरी**—ऐसी जगह जहाँ जाने से, ऐसा काम जिसे करने से, कलंक लगना, अनिवार्य हो, बदनामी का घर। **पारना**—दिये की लौ पर कजरौटा आदि रखकर कालिख इकट्ठा करना।

क़ाज़ी—पु० (अ०) मुसलमान न्यायाधीश जो शरा के अनुसार मामलों का निर्णय करें; विचारक; निकाह पढ़ाने वाला मौलवी। **उल-कुज़्ज़ात**—पु० काज़ियोंका अफसर, प्रधान न्यायाधीश। **मु० जी की दाढ़ी तबर्रूक में गयी**—किसी अच्छी चीज का यों ही समाप्त हो जाना, — "मिट्टी के देवता तिलक में ही उजाड़"। **जी दुबले क्यों, शहर के अंदेशे से**—ऐसी बातों की चिंता में घुलना जिनका अपने से संबंध न हो।

काजू—पु० एक पेड़ और उसका फल जिसकी गिरी मेवे के तौर पर खायी जाती है।

काट—पु० (सं०) कुआँ। स्त्री० (हि०) काटने का काम; काटने का ढंग; तराश; चोट, घाव; चालबाजी; पेंच का तोड़; तेल आदि की तलछट; मैल, मोरचा; घाव पर किसी चीज के लगने से होने वाली छरछराहट। **कपट**—स्त्री० छिपाकर या अनुचित रीतिसे काटना। **क़िबाला**—पु० ऐसा कबाला जिसमें नियत अवधि के अंदर मूल्य लौटा न दिया जाए तो वै पक्का हो जाता है, शर्तों या मीयादी वै। **कूट**—स्त्री मार-काट; लिखावट में शोधन, परिवर्तन। **छांट**—स्त्री० कतर-व्योंत; घटाव-बढ़ाव; शोधन। **पेचा**—पु० **फांस**—स्त्री० एकको अलग करने, दूसरे को फँसाने की क्रिया, दाँव-पेच; जोड़-तोड़।

काटकी—स्त्री० वह छड़ी जिसे बलंदर बंदर-भालू नचाते समय हाथ में रखते हैं।

काटन—पु० काटा हुआ अंश, कतरन।

काटना—स० क्रि० छुरी-कैंची आदि से किसी चीज के टुकड़े करना।

"का" के बाद "छ", "ज", "जी", "ट" आदि का क्रम अपनाया गया है।

9.9.2 अनुस्वार और अनुनासिक

वर्णक्रम के पश्चात् आपको अनुस्वार और अनुनासिक का ध्यान देना चाहिए। भाग 9.8 में हम चर्चा कर चुके हैं कि अनुस्वार और अनुनासिक ध्वनियों से युक्त शब्दों को हर वर्ण के क्रम में सबसे पहले रखा जाता है। ये ध्वनियाँ स्वर तथा व्यंजन दोनों के साथ प्रयुक्त होती हैं। अंक, आँख, उँगली, ओंकार, कंगन, मंगल, संख्या, साँचा आदि जैसे शब्दों में ये ध्वनियाँ प्रयुक्त हैं। इन शब्दों को संबद्ध वर्ण से आरंभ होने वाले शब्दों में सबसे पहले रखा जाता है। प्रश्न यह उठता है कि इन ध्वनियों का प्रयोग कहाँ-कहाँ होता है।

अनुनासिक का प्रयोग "आँख", "चाँद" आदि जैसे शब्दों में होता है। अनुस्वार का "रंग", "संगत", "यंत्र", "शंख", "इंगित" आदि जैसे शब्दों के लिए होता है। इसके अलावा अनुस्वार का प्रयोग पंचम वर्ण के लिए भी होता है। ध्यान देने की बात है कि "क" वर्ग, "च" वर्ग, "ट" वर्ग, "त" वर्ग और "प" वर्ग के पाँचवे अक्षर यानी "ङ", "ञ", "ण", "न" और "म" अनुनासिक ध्वनियाँ हैं:

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

इन अनुनासिक ध्वनियों को वर्ण और अनुस्वार, दोनों से लिखा जाता है। नीचे लिखे शब्दों को आपने प्रायः दोनों रूपों में पढ़ा होगा:

प्रबंध	—	प्रबन्ध
अंबर	—	अम्बर
घंटा	—	घण्टा
चंचल	—	चन्चल
गंगा	—	गङ्गा

लेकिन शब्दकोश में ऐसे शब्दों (पंचमाक्षर से बनने वाले शब्दों) को केवल अनुस्वार से ही लिखा जाता है। ऐसा कोश का उपयोग करने वालों की सुविधा के लिए ही किया गया है। अनुस्वार से लिखे जाने वाले सभी शब्दों को वर्ण-विशेष के क्रम में आरंभ में लिखा जाता है। उदाहरण के लिए पहले "पकंज", "पंच" आदि शब्द आएंगे, फिर "पकड़", "पवन" आदि।

अतः ऐसे शब्दों को सदैव वर्ण-विशेष से बनने वाले शब्दों के आरंभ में खोजें। उदाहरण के लिए, यदि आपको चार शब्द खोजने हैं — "कंगन", "चंगुल" "प्रांत" और "सौंदर्य" तो इन्हें क्रमशः "क", "च", "प्रा", "सौ" से आरंभ होने वाले शब्दों को पहले देखें।

9.9.3 स्वरों की मात्राएँ

कोश देखते समय अगली चीज़ जिसका आपको ध्यान रखना है, वह है — स्वरों की मात्राएँ। वर्णक्रम का ध्यान रखने का मायने वास्तव में स्वरों की मात्राओं का ध्यान रखना ही है। सभी वर्णों को मात्राओं के क्रम में रखा जाता है, जैसेः

पंगत	पूरा
पवन	पृथ्वी
पान	पेलना
पिता	पैर
पीर	पोखर
पुर	पौरूष

उपर्युक्त क्रम में अनुस्वार तथा 11 स्वरों की मात्राओं के अनुरूप है। पूरे के पूरे शब्दकोश में इसी क्रम का निर्वाह होता है।

9.9.4 संयुक्त व्यंजनों से आरंभ होने वाले शब्द

आरंभ में हम चर्चा कर चुके हैं कि "क्ष", "त्र", "ज्ञ" और "श्र" संयुक्त व्यंजन हैं। इनसे शुरू होने वाले शब्दों को आप शब्दकोश में कहाँ ढूंढेंगे? वर्णमाला में तो इनका उल्लेख सबसे आखिर में किया जाता है, लेकिन यदि आप शब्दकोश में इन्हें सबसे आखिर में यानी "ह" के बाद खोजेंगे तो ये वहाँ नहीं मिलेंगे। तब आप असमंजस में पड़ जाएँगे कि इन्हें कहाँ ढूँढा जाए?

अब आपको यह गौर करना होगा कि ये अक्षर किन व्यंजनों के मेल से बने हैं। हम चर्चा कर चुके हैं कि "क" और "ष" के मेल से "क्ष", "त" और "र" के मेल से "त्र", "ज" और "न" के मेल से "ज्ञ" तथा "श" और "र" के मेल से "श्र" बना है। अतः इन संयुक्त व्यंजनों से आरंभ होने वाले शब्दों को आप क्रमशः क, त, ज और श वर्णों के क्रम में खोजें। जब इन वर्णों और स्वरों के मेल से बनने वाले शब्द पूरे हो जाएँ, तब आप इनके मेल से बने संयुक्त व्यंजनों से बनने वाले शब्दों को देखें। याद रखें कि ये वर्णमाला के क्रम से ही होंगे और पहले आने वाले व्यंजनों के मेल से बने संयुक्त शब्द पहले आएँगे। उदाहरणार्थ 'क' और 'य' 'क' और 'र' अथवा 'क' और 'व' के मेल से बने शब्द 'क्ष' से बने शब्दों से पहले आऐंगे, यथाः

उदाहरण-1: "क्ष" से बने शब्द

"क्ष", "क" और "ष" के संयोग से बना है। अतः "ष" से पहले आने वाले व्यंजनों और "क" के मेल से बने शब्द "क्ष" से पहले आएंगे। साथ ही, पहले "क्ष" + "अ" से बने शब्द आएंगे, फिर "क्ष" और "अं" से बने शब्द। नीचे दिए गए उदाहरण से बात स्पष्ट हो जाएगीः

क्वाण—पु० (सं०) वीणा आदि का शब्द; क्वण।

क्वाथ—पु० (सं०) काढ़ा, जोशांदा; कष्ट, दुःख; व्यसन।

क्वाथोद्भव—पु० (सं०) रसौत।

क्वान—प० झनकार; क्वण।

क्वारंटाइन—पु० (अं०) छुतहे रोगों से पीड़ित, मुसाफिरों आदि को रोककर कुछ दिन अलग रखने का प्रबंध; वह स्थान जहाँ ऐसे लोग रखे जायें; छुतहा अस्पताल।

क्वार—पु॰ आश्विन मास।

क्वारछल, क्वारपन—पु॰ अविवाहित अवस्था, क्वारापन।

क्वारा—वि॰ कुँआरा, अविवाहित।

क्वार्टर—पु॰ (अं॰) चौथाई, चौथा भाग; साल का चौथा हिस्सा, तिमाही; 28 पौंड का वजन; वर्ग विशेष वालों की बस्ती; रेलवे, स्कूल, कालिज आदि के कर्मचारियों के लिए संस्था की ओर से बनवाया हुआ मकान; फौज के रहने या टिकने का स्थान, पड़ाव। **मास्टर**—पु॰ फौज का एक अफसर जिसका काम सैनिकों के लिए रसद, मकान आदि का प्रबंध करना होता है; एक जहाजी अफसर जिसका काम मल्लाहों को आवश्यक संकेत देना आदि होता है। **जेनरल**—पु॰ सैनिकों के लिए रसद, आवास का प्रबंध करने वाला विभाग का सबसे बड़ा अफसर।

क्वासर तारे—पु॰ अंतरिक्ष में स्थित वे सूक्ष्म तारे जो इतनी अधिक दूर हैं कि उनके प्रकाश को पृथ्वी तक पुहँचने में कई करोड़ वर्ष लग जाते हैं।

क्वैला—कोयला।

क्षंतव्य—वि॰ (सं॰) क्षमा करने के योग्य, सहन, करने के योग्य।

क्षंता (तृ)—वि॰ (सं॰) क्षमाशील, सहिष्णु।

क्ष—'क्' और 'श' के योग से बना हुआ संयुक्त अक्षर। पु॰ (सं॰) खेत; किसान; नाश, प्रलय; बिजली; एक राक्षस; विष्णुका चतुर्थ-नरसिंह-अवतार।

क्ष-किरण—स्त्री॰ (एक्स-रे) विद्युत-प्रवाह से प्रभावित वे अदृश्य किरणें जो हाथ या शरीर के अन्य किसी भाग के आर-पार पहुँचकर हड्डियों के ढाँचे का छायाचित्र विशेष आग्राही का चपट्ट कर अंक्ति कर देती हैं, पारदर्शी किरण;

क्षण—पु॰ (सं॰) छन, लमहा; 4/5 सेकेंड, निमेषका चौथाई या 30 कला के बराबर काल; अवसर; अवकाश; शुभ काल; उत्सव; आनंद। **द**—पु॰ ज्योतिषी; जल; रतौंधी। **दा**—स्त्री॰ रात; हलदी। **कर**—पु॰ चंद्रमा। **द्युति**—प्रकाशा, **प्रभा**—स्त्री॰ बिजली। **निःश्वास**—पु॰ सूँस। **अंग**—पु॰ दे॰ 'क्षणिक-वाद' (बौ॰)। **भंगु**—वि॰ दे॰ 'क्षणभंगुर'। **भगुर**—वि॰ छनभर में, थोड़ी ही देर में मिट जाने वाला। **मात्र**—अ॰ छन भर। **मूल्य**—पु॰ नगद दाम। **रामी (मिन्)**—पु॰ कबूतर। **विध्वंसी (सिन्)**—वि॰ क्षणभर में नष्ट होने वाला। — पु॰ 'क्षणिकवाद' माननेवाला व्यक्ति (बौ॰)।

क्षणतु—पु॰ (सं॰) जख्म, घाव।

क्षणन—पु॰ (सं॰) वद्य करना; आहत करना।

क्षणिक—वि॰ (सं॰) क्षणस्थायी। **वाद**—पु॰ बौद्ध दर्शन का यह मत कि प्रत्येक वस्तु उत्पत्ति से दूसरे ही क्षण में नष्ट हो जाती अर्थात् प्रतिक्षण बदलती रहती है।

क्षणिका—स्त्री॰ (सं॰) बिजली।

उदाहरण-2 : "ज्ञ" से बने शब्द

जौहर—पु॰ युद्ध में शत्रु की विजय निश्चित हो जाने पर राजपूत स्त्रियों का दहकती हुई विशाल चिता में एक साथ प्रवेश कर जल मरना; इस कार्य के लिए बनायी गयी चिता; (अ॰) रत्न; सार, सत्तव; गुण, खूबी (खूलना, दिखाना); तलवार पर की बारीक धारियाँ जिससे लोहे की अच्छाई का पता चलता है; आईने की चमक। **दार**—वि॰ जिसमें जौहर हो।

जौहरी—पु॰ (अ॰) जवाहरात का रोजगार करने वाला, रत्न व्यवसायी। वि॰ पारखी, गुण-दोष पहचानने वाला, कद्रदाँ। **बाजार**—पु॰ वह बाजार जहाँ जवाहरात बिकें, रत्नहाट।

ज्ञ—'ज्' और 'ञ' के संयोग से बना हुआ संयुक्त अक्षर। वि॰ (सं॰) (संज्ञा आदि के अंत में लगने से) जानने वाला, ज्ञाता (गुणज्ञ, बहुज्ञ इ॰)। पु॰ ज्ञानी, पंडित; जीवात्मा; ब्रह्मा; बुध ग्रह; मंगल ग्रह।

ज्ञपित, ज्ञप्त—वि॰ (सं॰) जलाया हुआ, ज्ञापित।

ज्ञप्ति—स्त्री॰ (सं॰) कोई बात जानने या जनाने की क्रिया, ज्ञान; बुद्धि; तेज करना; तोपण; स्तुति; मारण।

ज्ञात—वि॰ (सं॰) जाना हुआ, विदित। **यौवना**—स्त्री॰ वह मुग्धा नायिका जिसे यौवनागम का ज्ञान हो। **सिद्धांत**—वि॰ शास्त्र विशेष का पंडित।

ज्ञातव्य—वि॰ (सं॰) जानने योग्य, ज्ञेय।

ज्ञाता (त्)—वि॰ (सं॰) जानने वाला। पु॰ चतुर आदमी; परिचित व्यक्ति; जमानतदार।

ज्ञाति—(पु॰) (सं॰) पिता; पितृवंश में उत्पन्न व्यक्ति; गोतिया, भाई बंधु। स्त्री॰ जाति। **कर्म (न)**,
कार्य—पु॰ भाई-बंद का कर्तव्य।

उदाहरण 3: 'त्र'' से बने शब्द

त्योरूस—पु॰ दे॰ 'त्योरुस'।
त्यौहार—पु॰ दे॰ 'त्योहार'।
त्यौहारी—स्त्री॰ दे॰ 'त्योहारी'।
त्र—वि॰ (सं॰) (समासांत में) रक्षा करने वाला; तीन। प्र॰ सप्तमी विभक्ति के रूप में प्रयुक्त होने वाला एक प्रत्यय; साधन, उपकरण या यंत्र का सूचक (प्रेक्षित्र, खनित्र)। **त्रपा**—स्त्री॰ (सं॰) लज्जा, लाज, शर्म; कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री; कीर्ति, यश; कुल, वंश, जाति। वि॰ लज्जित। **निरस्त, हीन**—वि॰ निर्लज्ज। **रंडा**— स्त्री॰ वेश्या। **त्रपित**—वि॰ (सं॰) नम्र, विनयी; लज्जित। **त्रपु**—पु॰ (सं॰) सीमा, राँगा। **कर्कटी**—स्त्री॰ ककड़ी; खीरा। **त्रपुटी**—स्त्री (सं॰) छोटी इलायची। **त्रपुल**—पू॰ (सं॰) राँगा। **त्रपुष, त्रपुस**—पु॰ (सं॰) राँगा; खीरा। **त्रपुषी, त्रपुसी**—स्त्री (सं॰) खीरे की बेल; बड़ा इंद्रायन। **त्रप्सा**—स्त्री (सं॰) जमा हुआ कफ। **त्रप्स्य**—पु॰ (सं॰) मट्ठा। **त्रय**—वि॰ (सं॰) तीन। **त्रयी**—स्त्री॰ (सं॰) तीन का समाहार (जैसे-वेदत्रयी, बृहत्त्रयी); ऋक्, यजु; और सामवेद; वह स्त्री जिसका पति तथा संतानें जीवित हों, पुरंध्री; बोध, समझ। **तनु**—पु॰ वह जिसके तीनों वेद शरीर हों; सूर्य; शिव। **धर्म**—पु॰ वैदिक धर्म। **मुख**—पु॰ ब्राह्मण। **त्रयोमय**—पु॰ (सं॰) सूर्य; परमेश्वर।

उदाहरण 4 ''श्र'' से बने शब्द

श्यैनेय—पु॰ (सं॰) जटायु।
श्योणाक, श्योनाक—पु॰ (सं॰) एक वृक्ष; सोना पाढ़ा।
श्योरा—पु॰ (लश॰) लोहे का छल्ला और नुकीला लोहा लगा तंबू तानने, उठाने का बाँस।
श्रंथ—पु॰ (सं॰) ढीला करना, शिथिल करना; मुक्त करना; ढीलापन, शिथिलता; बाँधना; (मुक्त करने वाला) विष्णु। **श्रंथन**—पु॰ (सं॰) ढीला करना, खोलना; मुक्त करना; नुकसान पहुँचाना; मार डालना; नष्ट कर देना; बाँधना। **श्रंथित**—वि॰ (सं॰) ढीला; मुक्त; संबद्ध, एक साथ बाँधा हुआ; नुकसान पहुँचाया हुआ; वंध किया हुआ; विनष्ट; हर्षित, प्रसन्न। **श्रथन**—पु॰ (सं॰) ढीला या शिथिल करने की क्रिया, शिथिलीकरण; बाँधना; खोलना, मुक्त करना; बार-बार खुश करना; प्रयत्न, प्रयास; वध। **श्रद्दधन**—वि॰ (सं॰) श्रद्धायुक्त। **श्रद्ध**—वि॰ (सं॰) विश्वास करने वाला, श्रद्धावान्। पु॰ श्रद्धा। **श्रद्धांजलि**—स्त्री॰ (सं॰) गुरुजन या आदरणीय व्यक्ति के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए कहे गये शब्द। **श्रद्धा**—स्त्री॰ (सं॰) प्रेम और भक्तियुक्त पूज्यभाव; संप्रत्यय, विश्वास; आदर; शुद्धि, पवित्रता; स्पृहा, कामना; दोहद, गर्भवती स्त्री की इच्छा; किसी धर्म, संप्रदाय, शास्त्र, दर्शन आदि में आस्था, पूर्ण विश्वास; घनिष्ठता; मन शांति, मन की प्रसन्नता; प्रजापति को पुत्री; आदित्य या सूर्य की कन्या; दक्ष की पुत्री और धर्म की पत्नी (म॰ भा॰); काम की माता (मार्कंडेयपुराण); कर्दम की कन्या और वैवस्वत मनु की पत्नी, कामायनी (भा॰)। **श्रद्धालु**—वि॰ (सं॰) श्रद्धायुक्त; कामनायुक्त। स्त्री॰ किसी वस्तु की कामना करने वाली गर्भिणी स्त्री, दोहदवती। **श्रद्धावान् (वत्)**—वि॰ (सं॰) श्रद्धायुक्त। **श्रद्धास्पद**—वि॰ (सं॰) श्रद्धाका पात्र, श्रद्धा करने योग्य, श्रद्धेय। **श्रद्धेय**—वि॰ (सं॰) प्रेम और भक्ति के योग्य, पूजनीय, विश्वसनीय, श्रद्धा-भाजन।

9.9.5 दो या दो से अधिक व्यंजनों के मेल से बने संयुक्ताक्षर

संयुक्त अक्षरों से बने शब्दों को देखने के लिए सबसे पहले आपको यह ध्यान रखना होगा कि संयुक्त अक्षरों को अकारादि क्रम में स्वरों के बाद रखा जाता है। यानी पहले किसी व्यंजन से बनने वाले वे शब्द रखे जाते हैं जो उस व्यंजन और विभिन्न स्वरों के संयोग से बनते हैं। इस तरह ''आ'' से लेकर ''औ'' तक स्वरों के मेल से बनने वाले शब्दों के पश्चात् उस व्यंजन के दूसरे व्यंजनों के मेल से बनने वाले शब्दों को रखा जाता है। उदाहरण के लिए शब्दकोश की निम्नलिखित प्रविष्टियों पर ध्यान दीजिए:

सौहार्द—पु० (सं०) हृदय की सरलता; सद्भाव; मैत्री; मित्रका पुत्र। **निधि**—पु० राम। **व्यंजक**—वि० मैत्रीभाव को छिपा न रख सकनेवाला।

सौहार्द्य—पु० (सं०) मैत्री, दोस्ती।

सौहित्य—पु० (स०) तृप्ति, संतुष्टि; पूर्णता; मनोहरता; हृदय-ग्राहिता।

सौहीं—अ० सामने, सम्मुख। पु० एक तरह की रेती; एक औजार।

सौहृद—वि० (सं०) मित्र-संबंधो; मित्रका। पु० मित्र; एक प्राचीन जाति; प्रेम मैत्री (समास में); रुचि (समासमें)।

सौहृदय—वि० (सं०) प्रगढ़ मैत्री।

सौहृदय्य, सौहृद्य—पु० (सं०) मैत्री, दोस्ती।

स्कंत्ता (तृ)—वि० (सं०) कूदने वाला, छलांग मारने वाला।

स्कंद-पु० (सं०) शरण, बहना; नाश; ध्वस; पारा; उछलना; उछलनेवाली चीज, कार्त्तिकेय; शिव; शरीर; राजा; नदीतट; चतुर व्यक्ति; एक बालरोग; तरल पदार्थका, रक्त आदि का गाढ़ा जमा हुआ रूप (क्लांट)। **गुप्त**—पु० गुप्तवंशका एक प्रसिद्ध सम्राट। **गुरू**—पु० शिव। **ग्रह**—पु० एक बालग्रह। **जननी**—स्त्री० पार्वती। **जित्**—पु० विष्णु। **पुत्र**—पु० चोर के लिए प्रयुक्त शिष्ट नाम। **पुर**—पु० एक पुराना नगर। **पुराण**—पु० अठारह पुराणों में से एक। **माता**—(तृ)-स्त्री० दुर्गा, पार्वती। **विशाल**—पु० शिव। **षष्ठी**—स्त्री० चैत्र-शुक्ला षष्ठी; इस दिन होने वाला व्रत, कार्त्तिक या अगहन सुदी षष्ठी।

स्कंदक—पु० (सं०) कूदने उछलने वाला व्यक्ति; सनिक; एक वृत्त।

स्कंदन—पु० (सं०) क्षरण, बहना; स्खलन, पात; रेचन; गमन; शोषण; रक्त का जमाना या ठंढक पहुँचाकर जमाना।

स्कंदन—पु० (कोम्यूनेशन) द्रव पदार्थ का जम जाना, ठोस रूप ग्रहण कर लेना।

स्कंदांशक—पु० (सं०) पारा।

स्कंदापस्मार—पु० (सं०) एक बालग्रह जिसमें मूर्च्छा होती है।

स्कंदापस्मारी (रिन्)—वि० (सं०) स्कंदापस्मार रोगसे ग्रस्त।

स्कंदित—वि० (सं०) क्षरित, बहा हुआ; पतित; गमनशील।

स्कंदी (दिन्)—वि० (सं०) क्षरित होने वाला, बहने वाला, पतन शील; उछलने, कूदने वाला; जमने वाला; स्फुटित होने वाला।

स्कंदेश्वरतोर्थ—पु० (सं०) एक प्राचीन तीर्थ।

स्कंदोपनिषद्—स्त्री० (सं०) एक उप निपद्।

स्कंदोल—वि० (सं०) शीतल, ठंढा। पु० ठंढक।

स्कंध—पु० (सं०) कंघा, पीठ का ऊपरी भाग; पेड़ का तना (स्टेप)।

इस उदाहरण के शब्द "सौ" से शुरू हो रहे हैं। स् + औ के बाद आने वाला अगला वर्ण "ह्" है। सबसे पहले स् + औ + ह् + आ + र् + द् + अ (सौहार्द) का क्रम है। फिर स + औ + ह + आ + र् + द् + य् + अ (सौहार्द्य) का, फिर स + औ + ह् + इ + त् + य् + अ (सौहित्य) का और इसी ढंग से यह क्रम आगे बढा है।

इस उदाहरण के शब्द "सौ" से शुरू हो रहे हैं। स् + औ के बाद आने वाला अगला वर्ण "ह्" है। सबसे पहले स् + औ + ह् + आ + र् + द् + अ का क्रम है। फिर स + औ + ह + आ + र् + द् + य् + अ का, फिर स + औ + ह् + इ + त् + य् + अ का और इसी ढंग से यह क्रम आगे बढ़ा है।

अब पहले वर्ण के क्रम में आगे बढ़ते जाइए। आपने देखा कि "स" और "कं" से मिलकर शुरू होने वाले शब्द "स" और "औ" से मिलकर बनने वाले शब्दों के बाद आए हैं।

"स" और "कं" के क्रम के बाद "स" तथा वर्णमाला के अन्य व्यंजनों के संयोग से बने शब्दों का क्रम आएगा और यह क्रम पहले, दूसरे, तीसरे वर्ण में चलेगा। इसी दृष्टि से पहले "स्कंता" आया है, फिर "स्कंद" और "स्कंदक", "स्कंदन" आदि। स्थल, स्थान, स्मरण आदि भी इसी तरह चलेंगे। इस प्रकार आपने देखा कि वर्णक्रम का शब्द के पहले अक्षर में तो निर्वाह होता ही है, शब्द के अन्य अक्षरों में भी वर्णक्रम का निर्वाह होता है। उपर्युक्त उदाहरण में "सौहार्द" पहले आया है और "सौहार्द्य" उसके बाद। "सौहार्द" में "र्" "द" का मेल है, जबकि "सौहार्द्य" में र् + द् + य का मेल है।

इसी आधार पर "सहृदय" शब्द बाद में आया है। संयुक्ताक्षरों से बने शब्दों के साथ प्रयुक्त स्वरों का भी यही क्रम रहा है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित प्रविष्टियों को देखिए:

क्या—सर्व॰ प्रश्नवाचक सर्वनाम; कौन सी चीज; कौन बात या घटना। वि॰ कितना; बहुत; कैसा; बहुत बढ़िया। अ॰ किसलिए, किस कारण; प्रश्नसूचक शब्द।
क्यार—प्र॰ दे॰ 'का'। पु॰ पेड़का थाला।
क्यारी—स्त्री॰ बाग या खेत की मेंड़ बनाकर प्रायः चौकोर खाने की शक्ल में किया हुआ विभाग।
क्याली—स्त्री॰ दे॰ 'क्यारी'।
क्यूरी— (क्यूरी) रेडियो ऐक्टिवता नापने का मात्रक। एक क्यूरी से अभिप्राय है एक ग्राम रेडियम की ऐक्टिवता; एक क्यूरी की रेडियो ऐक्टिवता में प्रति सेकन्ड ३७,०००,०००,००० विघटन होते है।
क्यों—अ॰ किसलिए, किस कारण। **कर**—कैसे। **कि**—कारण यह कि, इसलिए कि।
नहीं—अवश्य, बेशक। **न**—हो-क्या कहना, शाबाश।
क्योडा—पु॰ केवड़ा।
क्रंदन—पु॰ (सं॰) रोना, विलाप; युद्ध के लिए आह्वान, ललकारना।

"क्" + "य्" + "आ" के मेल से बने शब्दों (क्या, क्यार, क्यारी) के पश्चात् "क्" + "य्" + ऊ के मेल से बना शब्द (क्यूरी), फिर "क्" + "य्" + "ओ" + "अं" के मेल से बना शब्द "क्यों"; फिर "क्" + "य" + "ओ" के मेल से बना शब्द "क्योड़ा" और फिर "क्" + "र" + 'अं" का क्रम आया है।

9.10 वर्णक्रम अथवा अकारादिक्रम का विश्लेषण

आप पढ़ चुके हैं कि शब्दकोश में शब्दों की प्रविष्टि वर्णक्रमानुसार होती है। वर्णक्रम को "*अकारादिक्रम*" भी कहा जाता है। इस क्रम को भली-भाँति समझ लेने पर कोश देखने का काम बहुत आसान हो जाता है। किसी शब्द में कौन-कौन से वर्ण प्रयुक्त हुए हैं, यह जान लेने पर उनका क्रम आप आसानी से समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक शब्द है — "रोहित"। इसमें तीन व्यंजन "र", "ह" और "त" इस्तेमाल हुए हैं और साथ ही तीन स्वर "ओ", "इ"; और "अ" इस्तेमाल हुए हैं। इन तीनों स्वरों तथा व्यंजनों का क्रम इस प्रकार है:

रोहित = र् + ओ + ह् + इ + त् + अ

अब शब्दकोश में आपको "रो" तक पहुँचना है तो "र + ऐ" से मिलकर बनने वाले शब्दों के बाद आप र + ओ से मिलकर बनने वाले शब्दों को देखना शुरू करें। पहले "रों" यानी "र + ओं" से बनने वाले शब्द आएंगे, फिर र + ओ से मिलकर बनने वाले शब्द। अब इनमें दूसरे वर्ण के क्रम को देखना शुरू करें और "ह" पर पहुँचें। इस तरह, र + ओ + ह पर पहुँचने के बाद र + ओ + ह + इ पर पहुँचें और फिर तीसरे वर्ण को देखना शुरू करके "त" पर पहुँचें। "त" पर पहुँचने पर आप "रोहित" शब्द तक पहुँच जाएँगे। वर्णक्रम की यह पद्धति हम आपको कुछ उदाहरणों की सहायता से विस्तार से समझाएँगे। आइए, नीचे कुछ शब्दों का वर्ण विश्लेषण करें:

शोभित	=	श् + ओ + भ् + इ + त् + अ
पूरा	=	प् + ऊ + र् + आ
पराधीन	=	प् + अ + र् + आ + ध् + ई + न् + अ
परोक्ष	=	प् + अ + र् + ओ + क् + ष् + अ

यहाँ आप गौर करें कि सभी शब्द, व्यंजनों तथा स्वरों की सहायता से निर्मित होते हैं। अतः वर्णक्रम को समझने के लिए शब्द में प्रयुक्त व्यंजनों और स्वरों पर गौर करना होगा। उपर्युक्त "परोक्ष" शब्द में प्रयुक्त "क्ष" संयुक्त व्यंजन है, जो "क + ष" व्यंजनों के मेल से बना है। अतः वर्णक्रम निर्धारित करते समय "क" + "ष" + "अ" दिखाया गया है। इसी तरह अन्य संयुक्त व्यंजनों से बने अन्य शब्दों का वर्ण विश्लेषण करना हो तो निम्न प्रकार से लिखा जाएगा:

पत्र — प् + अ + त् + र् + अ
क्षत्रिय — क् + ष् + अ + त् + र् + इ + य् + अ
त्रिकोण — त् + र् + इ + क् + ओ + ण् + अ
त्रिशंकु — त् + र् + इ + श् + अं + क् + उ
विज्ञान — व् + इ + ज् + न् + आ + न् + अ
ज्ञेय — ज् + न् + ए + य् + अ
श्रम — श् + र् + अ + म् + अ
श्रोता — श् + र् + ओ + त् + आ

आधे या हलंत शब्द : संयुक्त व्यंजनों के अतिरिक्त कोश देखते समय एक अन्य चीज़ पर आपको गौर करना होगा। हम चर्चा कर चुके हैं कि हिंदी शब्दों में कई बार आधे वर्ण यानी हलंत का भी इस्तेमाल होता है जैसे "स्मरण", "शक्ति", "स्वप्न" आदि शब्दों में "स्" "क्" "स्", "प्" आदि वर्ण हलंत हैं यानि उन्हें स्वर की सहायता के बगैर प्रयुक्त किया गया है। इनमें प्रयुक्त व्यंजनों को आधा लिखने की बजाय हलंत द्वारा भी लिखा जा सकता है जैसे "स्म्रण", "शक्ति", "स्वप्न"। इस संबंध में प्रश्न उठता है कि इन शब्दों का वर्ण विश्लेषण करते समय आपको इन्हें हलंत कैसे दिखाना होगा। आइए देखें कि हलंत कैसे दिखाया जाएगाः

स्मरण — स् + म् + अ + र् + अ + ण् + अ
शक्ति — श् + अ + क् + त् + इ
स्वप्न — स् + व् + अ + प् + न् + अ

हिंदी में बड़ी संख्या में शब्द ऐसे हैं जिनमें दो वर्णों को संयुक्त किया गया है। कोई शब्द किन-किन वर्णों के संयोग से बना है तथा इस संयोग में कौन-सा वर्ण पूरा तथा कौन-सा आधा (यानी हलंत) है, यह जानना आवश्यक है। अक्सर तो उस शब्द को लिखने के ढंग से ही पहचान लेंगे कि इसमें कौन-सा वर्ण हलंत है। उदाहरण के लिए "शब्द" "वर्ण" और "आवश्यक" में स्पष्ट ही है कि "ब", "र" और "श" हलंत हैं। लेकिन कुछ शब्दों में आधा वर्ण पहचानने में देर लगती है जैसे "क्रम", "प्रकार", "समग्र", "इकट्ठा", "गड्ढा"।

यहाँ लिखने के ढंग के कारण क्रमशः "क", "प", "ग", "ट", "डा" पूरे वर्ण दिखाई दे रहे हैं और "र", "ढ", "ठ" हलंत। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। इन शब्दों का वर्ण विश्लेषण से यह बात स्पष्ट हो जाएगीः

क्रम — क् + र् + अ + म् + अ
प्रकार — प् + र् + अ + क् + आ + र् + अ
समग्र — स् + अ + म् + अ + ग् + र् + अ
इकट्ठा — इ् + क् + अ + ट् + ठ् + आ
गड्ढा — ग् + अ + ड् + ढ् + आ

"र" वर्ण के मेल से बने शब्द

कुछ अक्षरों से मिलकर बनने वाले संयुक्ताक्षरों पर खासतौर से ध्यान देने की जरूरत हैः

"र" से मिलकर बनने वाले संयुक्त वर्ण तीन तरह से लिखे जाते हैंः
"प्रकार", "पर्व", "राष्ट्र" में क्रमशः "प" और "र", "र" और "व"; तथा "ट" और "र" का संयोग है। "प्रकार" में "प" हलंत यानी आधा है। इसी प्रकार, "पर्व" में "र" हलंत है और "राष्ट्र" में "ट" हलंत है।

इस तरह गौर करें कि जब "र" हलंत होता है तो वह हमेशा शिरोरेखा के ऊपर लिखा जाता है जैसे — "धर्म", "आशीर्वाद", "गर्व", "निर्भय", "संदर्भ" आदि शब्दों में। जब कोई अन्य अक्षर "र" के साथ संयुक्त होता है तो उसे दो तरह से लिखा जाता है। "प्रकार", "क्रय", "स्रोत", "सम्राट", "द्रव्य", "ह्रस्व" आदि शब्दों में "र" पाई के साथ तथा "राष्ट्र", "ड्रम" आदि शब्दों में वर्ण के नीचे। "श" तथा "र" के मिलने पर उन्हें "श्‌र" न लिखकर "श्र" लिखा जाता है।

9.11 शब्दों को वर्णानुक्रम में लिखना

आप वर्णक्रम को समझ गए हैं या नहीं, इस बात की जाँच आप कुछ शब्दों को वर्णक्रम में लिखने का प्रयास करके कर सकते हैं। हम "क" वर्ण से शुरू होने वाले 20 शब्दों को लेते हैं:

कविता, कौआ, कंकण, कागज, कीर्ति, कौस्तुभ, कोमल, किताब, क्या, किंवदंती, कुसंगति, किरण, कील, किरात, कुंदन, कूदना, कंदरा, किंचित, क्यों, कबीर।

इन शब्दों को वर्णक्रम में लिखने के लिए सबसे पहले हम 'क' और 'अं' यानी "कं" से बनने वाले शब्द लें। ऐसे शब्द दो हैं — कंकण, कंदरा।

फिर "क" से बनने वाले शब्दों को लेंगे। ये हैं — "कविता", "कबीर"। इनमें "ब" पहले आएगा और "व" बाद में। अतः क्रम होगा — 'कबीर", "कविता"।

फिर "क" और "आ" से आरंभ होने वाले शब्द। "कागज" एकमात्र शब्द है।

इसके बाद "क" और "इ" से मिलकर बनने वाले शब्द रखें — किंचित, किंवदंती, किताब, किरात, किरण। इनका क्रम होगा — किंचित, किंवदंती, किताब, किरण और किरात। आपने ध्यान दिया होगा कि "क" और अनुस्वार से मिलकर बने शब्दों को पहले रखा गया है और बाद में संबद्ध स्वर को। इसीलिए पहले 'किंचित' और 'किंवदंती' हैं, फिर 'किरण' और 'किरात'। हमेशा ध्यान रखिए कि शब्दकोश में अनुस्वार-युक्त शब्द पहले आता है और अनुस्वार-विहीन शब्द बाद में।

अब "क" और "ई" से बनने वाले शब्दों को लेते हैं। "कीर्ति" और "कील" का क्रम होगा — "कीर्ति", "कील"।

अब "कुं" और "कु" से बनने वाले शब्दों को लें — "कुंदन" और फिर "कुसंगति" अब "कू" से बनने वाला शब्द एक ही है — "कूदना"।

"को" से बनने वाले शब्द भी एक है — "कोमल"।
"कौ" से बनने वाले शब्द दो हैं — "कौआ" और "कौस्तुभ"।

इसके बाद संयुक्त वर्णों वाले शब्दों की बारी आती है। इनका क्रम होगा — "क्या", "क्यों"।

इस तरह, इन शब्दों का पूरा वर्णक्रम इस प्रकार होगा :

कंकड़	कीर्ति
कंदरा	कील
कबीर	कुंदन
कविता	कुसंगति
कागज़	कूदना
किंचित	कोमल
किंवदंती	कौआ
किताब	कौस्तुभ
किरण	क्या
किरात	क्यों

बोध प्रश्न 4

1) हिंदी शब्दकोश देखना आपको क्यों आना चाहिए? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

2) हिंदी वर्णमाला के सभी व्यंजन अपने आप में पूर्ण हैं या उन्हें किसी और वर्ण की सहायता की आवश्यकता पड़ती है?

....
....
....
....
....
....
....
....

3) वर्णक्रम समझना क्यों आवश्यक है?

....
....
....
....
....
....
....
....

4) निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश में किस वर्ण के अंतर्गत खोजेंगे

क) त्रिशंकु	घ) स्याही
ख) श्रमिक	ङ) ज्ञानी
ग) क्षेत्रीय	

अभ्यास

निम्नलिखित शब्दों को अकारादिक्रम में लिखिए:

पर्वत	पतंग	पंकज	पृथ्वी
प्रेरणा	प्रकाश	पुंडरीक	पोखर
प्यासा	पूर्णिमा	पालना	पिता
पीतांबर	पेंदी	पूर्वज	पैगंबर
पैतृक	पिलपिला	पुराना	पीना
पिलाना	पुजारी		

9.12 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि पारिभाषिक शब्दावली क्या होती है, इसकी क्या विशेषताएँ हैं तथा भाषा की विविध प्रयुक्तियों के संदर्भ में पारिभाषिक शब्दावली की क्या प्रासंगिकता होती है। अब आप जान गए हैं कि प्रयोजनमूलक हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली किस प्रकार निर्मित हुई है। अब आप तकनीकी और पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत और प्रक्रिया की जानकारी दे सकते हैं।

हिंदी शब्दकोश के उपयोग के विषय में भी आपको जानकारी इस इकाई में मिली है। अब आप शब्दकोश देखकर न केवल अपनी जरूरत के शब्दों के अर्थ का पता लगा सकते हैं बल्कि हिंदी वर्णक्रम की सही जानकारी का उपयोग करते हुए शब्दों को अकारादिक्रम से लिख भी सकते हैं।

9.13 शब्दावली

परिसीमित — जिसकी सीमा तय कर दी गई हो।

असंदिग्ध — जिसमें कोई संदेह न हो।

कालांतर — कुछ समय बाद।

लिप्यंतरण — एक लिपि से दूसरी लिपि में उतारना। जैसे रोमन लिपि से देवनागरी लिपि में लिखना।

9.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) "समेकित प्रशासन शब्दावली" — वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
2) "बृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह" (मानविकी खंड) — वही।
3) "बृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह" (विज्ञान खंड) — वही।

"बृहत हिंदी कोश", मुकुंदी लाल श्रीवास्तव, राजवल्लभ सहाय, ज्ञानमंडल, वाराणसी।

"हिंदी शब्द सागर", काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

9.15 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 9.2
2) ग
3) घ

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 9.4

बोध प्रश्न 3

क) 1) अंगीकृत
2) अनुवाद
3) कम से कम
4) संस्कृत धातुओं

ख) 1) अंगीकरण
2) अनुकूलन
3) नव-निर्माण
4) अनुवाद

बोध प्रश्न 4

1) देखें भाग 9.8.1
2) देखें भाग 9.8.2
3) देखें भाग 9.8.3
4) क) त, ख) श, ग) क, घ) स, ङ) ज